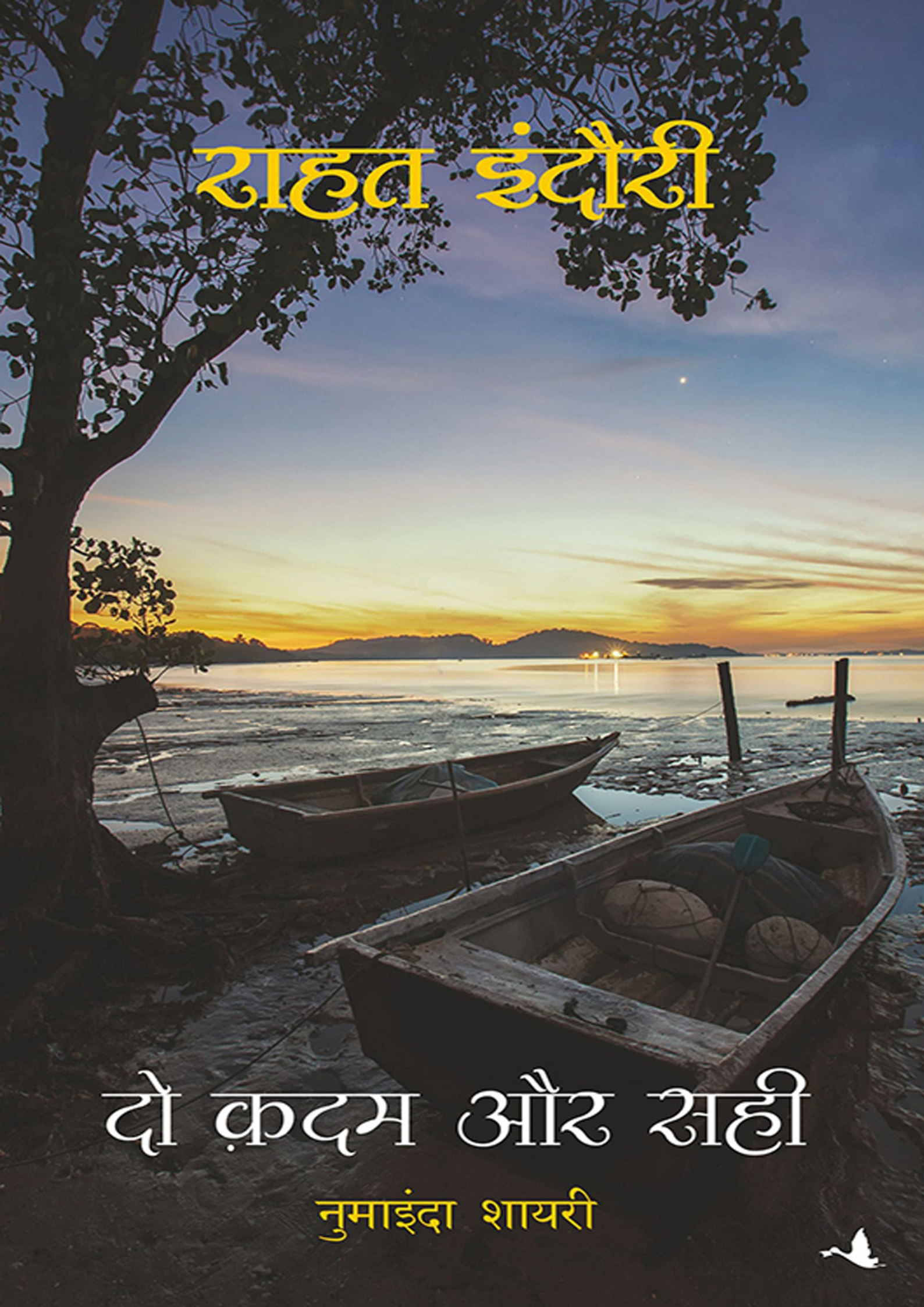
राहत इंदौरी
दो क़दम और सही
नुमाइंदा शायरी

VISIT…

दो क़दम और सही

नुमाइंदा शायरी

दो क़दम और सही

नुमाइंदा शायरी

राहत इंदौरी

संकलन एवं संपादन: सचिन चौधरी

मंजुल पब्लिशिंग हाउस

मंजुल पब्लिशिंग हाउस
कॉरपोरेट एवं संपादकीय कार्यालय
द्वितीय तल, उषा प्रीत कॉम्प्लेक्स, 42 मालवीय नगर, भोपाल-462003
विक्रय एवं विपणन कार्यालय
7/32, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
वेबसाइट: www.manjulindia.com
वितरण केन्द्र
अहमदाबाद बेंगलुरू, भोपाल, कोलकाता, चेन्नई,
हैदराबाद, मुम्बई, नई दिल्ली, पुणे

दो क़दम और सही
कॉपीराइट © 2017 राहत इंदौरी
सर्वाधिकार सुरक्षित

यह संस्करण 2017 में पहली बार प्रकाशित

संकलन एवं संपादन: सचिन चौधरी

ISBN **978-81-8322-788-9**

राहत इंदौरी इस पुस्तक के लेखक होने की नैतिक ज़िम्मेदारी वहन करते हैं

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे या इसके किसी भी हिस्से को न तो पुनः प्रकाशित किया जा सकता है और न ही किसी भी अन्य तरीक़े से, किसी भी रूप में इसका व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

उर्दू के विश्वविख्यात शायर डॉ. राहत इंदौरी का जन्म 1 जनवरी, 1950 को इंदौर में स्वर्गीय रिफ़तुल्लाह कुरैशी एवं स्वर्गीया मक़बूल बी के घर चौथी संतान के रूप में हुआ। राहत साहब ने आरंभिक शिक्षा देवास तथा इंदौर के नूतन स्कूल से प्राप्त करने के बाद इंदौर विश्वविद्यालय से उर्दू में एम.ए. एवं 'उर्दू में मुशायरा' शीर्षक से पीएच.डी. की डिग्री हासिल की। तत्पश्चात 16 वर्षों तक इंदौर विश्वविद्यालय में उर्दू साहित्य अध्यापन और त्रैमासिक पत्रिका 'शाखें' का 10 वर्षों तक सम्पादन किया। इसके साथ ही मुशायरों और कवि सम्मेलनों में शिरकत का सिलसिला आरंभ हुआ, जो आज तक बदस्तूर जारी है।

पिछले 40-45 वर्षों से राहत साहब भारत भर के प्रमुख शहरों के अलावा अमरीका, कैनेडा, जर्मनी, इंग्लैंड, सिंगापुर, पाकिस्तान, क़तर, ओमान, बहरीन, सऊदी अरब, यू.ए.ई., बांग्लादेश, नेपाल, भूटान जैसे देशों में अनेकों बार आमंत्रित किए गए हैं और वहाँ अपने लाखों चाहने वालों को अपनी शायरी और प्रस्तुतिकरण के जादुई अंदाज से रूबरू करा चुके हैं। देश दुनिया के अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से उन्हें नवाज़ा जा चुका है।

इंदौर, भोपाल, दिल्ली, लखनऊ और लाहौर विश्वविद्यालय में डॉ. राहत इंदौरी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं जीवन पर शोध के पश्चात् स्कॉलर्स ने एम.फिल. एवं पीएच.डी. डिग्रियाँ प्राप्त की हैं। बदायूँ की मशहूर उर्दू साहित्यिक पत्रिका 'लम्हे लम्हे' ने डॉ. इंदौरी पर 'डॉ. राहत इंदौरी - फन और शख्सियत' नाम से एक वृहद ग्रंथ का प्रकाशन किया है, जिसमें हमारे समय के लगभग सभी प्रमुख आलोचक और कवियों के लेख शामिल हैं।

राहत साहब ने हिन्दी फ़िल्मों के लिए भी कई मशहूर गीत रचे हैं और लगभग सभी प्रमुख ग़ज़ल गायकों ने उनकी ग़ज़लों को अपनी आवाज़ दी है।

वे इंदौर में अपनी पत्नी सीमा राहत, बेटे-बहू, पोता-पोती के साथ रहते हैं। उनकी बेटी शिबली देवास में ब्याही गई हैं। बड़े बेटे फैसल राहत एक बैंकर हैं और छोटे बेटे सतलज राहत ई.टी.वी. में न्यूज कोरेस्पॉन्डेंट के रूप में कार्य करने के साथ ही शायरी भी करते हैं।

संपर्क:
राहत इंदौरी
पोस्ट बॉक्स 555, इंदौर

/rahatindori
/rahatindoriofficial
rahatindoripost@gmail.com
rahatindori.com

उर्दू पुस्तकें:

- धूप-धूप
- पाँचवा दरवेश
- नाराज़

हिन्दी पुस्तकें:

- मेरे बाद
- धूप बहुत है
- चाँद पागल है
- मौजूद
- नाराज़

मिसाइली लहजे और तेज़ाबी तेवर का फ़नकार

ओकाबी नज़र, मिसाइली लहजा और तेज़ाबी तेवर जिस फ़नकार की पहचान हो उसके दौर को पहचानने की कोशिश कीजिए तो ज़ाहिर हुए बग़ैर नहीं रहता कि उसका ज़िन्दा ज़मीर हर मस्लेहत को इनकारने, हर बंदिश को ठुकराने और हर रियाकारी को बेनकाब करने ही में तमानीयत महसूस करता है। जिसने ख़्वाब देखने की उम्र से ही हक़ीक़त शनासी के जहन्नम से गुज़रना सीखा हो उसके लफ़्ज़ अंगारे और मिसरे शोले न बन जाएं तो और क्या बनें। चारों तरफ़ फैले हुए बदउनवान और बेएतबार समाज के खोखलेपन और उस खोखलेपन के खिलाफ़ शदीद रद्दे अमल ने डॉ. राहत इंदौरी की शायरी को कुछ ऐसे मौज़ुआत फ़राहम कर दिए हैं, जिन्हें तख़्लीकी क़लम ने इससे पहले छूने या छेड़ने का तसव्वुर भी नहीं किया था, इसलिए इसकी नुकीली काट जहाँ उन्हें अवाम की आख़िरी बेसहारा सफ़ तक ले गयी वहीं ख्वास उनके एहतेजाजी लबो लहजे के कायल हुए बग़ैर न रह सके। उर्दू मुशायरे की मक़बूलियत के आज़मूदा नुस्खों को राहत ने अपनी शोला बयानी से कुछ इस तरह हर्फ़-ए-बातिल साबित कर दिखाया कि तारीख़-ए-तहत का एक नया उनवान बन गया। बज़ाहिर वक़्त के हर ज़ुल्म के ख़िलाफ़ सीना सिपर हो जाने वाले राहत इंदौरी एन आलम ए एहतेजाज में भी शायरी से दूर नहीं होते। यहीं उनके तख़लीक़ी रख रखाव का हुस्न उभरता है जो एक तरफ़ भीड़ को भीड़ की ज़हनी सतह पर जाकर तो दूसरी तरफ़ अदब के मेयारे नक़्दो नज़र को भी अपनी तरफ़ मुतवज्जो करता है।

जब हज़ारों लोगों पर मुश्तमिल मुशायरों में अपनी तमाम तर घन गरज के साथ छा जाने वाले राहत इंदौरी सफ़हे किरतास पर उभरते हैं तो ज़ाहिरी व मानवी ख़ुशबुओं से मुज़रयन उनके शेरी पैकर और उर्दू की अदबी तनक़ीद से आँखों में आँखे डालकर बात करने का हौसला करते दिखाई देते हैं, और फिर ये मानना पड़ता है कि तमतराक़े इक़्तेदार के गिरेबान पर हाथ डालने की हिम्मत रखने वाले राहत इंदौरी की मुरब्बी ज़हनीयत सरसती ख़ाकसारियत और तबई क़लन्दरियत उन्हें एक ऐसा मुतवाज़ी अन्दाज़ बख़्शती है जो अपने अहद में अलग ही फ़नकार साबित करने को काफ़ी है।

—प्रो. वसीम बरेलवी

मंच का जादूगर

डॉ. राहत इंदौरी उर्दू तहज़ीब के ऐसे वट वृक्ष हैं जिसकी छाया में कई नवांकुर शायर और कवि बैठे हैं जिन्होंने उस वृक्ष की छाया भी महसूस की है। मैंने उन्हें जब कवि सम्मेलनों या मुशायरों में सुना है और मुझे जब भी उनके साथ बैठने का सौभाग्य मिला है, तो मुझे उनकी शायरी उर्दू और हिन्दी की तहज़ीब का जीता जागता उदाहरण लगी है। मैं राहत साहब से तहज़ीब सीखने की कोशिश करता हूँ और जब वे मंच पर स्नेह से गले लगा लेते हैं, तब जो सुख मैं महसूस करता हूँ उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। मैं उनका श्रोता हूँ और कई बार मंच पर जब वे पढ़ते तो मैं कोशिश करता हूँ कि इस जादूगर का वो जादू देख सकूँ, सीख सकूँ, जो उनकी शायरी, शैली और प्रस्तुतीकरण में बोलता है।

श्रोताओं के दिलों पर राज करने का जो हुनर राहत साहब के पास है, मैं उससे चमत्कृत हूँ और मेरी ये दुआ है कि हिन्दुस्तानी तहज़ीब का ये स्वर हम सदा सुनते रहें।

—डॉ. हरिओम पँवार

राहत साहब में कुछ बात है जो उन्हें भीड़ से अलग करती है। शायरी में क्या कहा गया है यह तो महत्त्वपूर्ण है ही लेकिन कैसे कहा गया है यह और भी मायने रखता है, इसे हम क्राफ़्टिंग कह सकते हैं। राहत साहब शायरी में कंटेन्ट के एतबार से तो अहम शायर हैं ही लेकिन कंटेन्ट को क्राफ़्टिंग के फ़न से वे उसे यादगार और बड़ा बना देते हैं। ये उनका हुनर ही है जो उन्हें एक ख़ास मुकाम पर पहुँचा देता है।

राहत साहब जब नई पीढ़ी के लिए शेर पढ़ते हैं तो युवाओं में ऐसी लहर दौड़ उठती है कि जैसे वह उनके ही दिल से निकली बात हो -

तूफ़ानों से आँख मिलाओ, सैलाबों पर वार करो
मल्लाहों का चक्कर छोड़ो तैरके दरिया पार करो

या फिर

शाखों से टूट जाए वो पत्ते नहीं हैं हम
आँधी से कोई कह दे कि औकात में रहे

राहत साहब की ग़ज़लों का संकलन करने का मौक़ा मिला तो मुझे न सिर्फ़ ख़ुशी हुई बल्कि एक ज़िम्मेदारी का अहसास भी हुआ। सागर से कुछ चुनिन्दा मोतियों को चुनने का काम बेहद मुश्किल जान पड़ा क्योंकि हर मोती मेरे सामने हाथ उठाकर खड़ा हो जाता था कि मैं क्यों नही, और मैं क्यों नहीं! मैं कुछ बेहतरीन शायरी इस किताब में सँजोने की कोशिश कर रहा हूँ, और पुरउम्मीद हूँ कि राहत जी के चाहने वालों को यह संग्रह पसंद आएगा।

—सचिन चौधरी
संकलनकर्ता

नई ग़ज़लें

चुनिंदा ग़ज़लें

चुनिंदा अशआर

फ़िल्मी नग़मे

नई ग़ज़लें

1

ज़ुल्फ़ बन कर बिखर गया मौसम,
धूप को छांव कर गया मौसम...

मैंने पूछी थी ख़ैरियत तेरी,
मुस्करा कर गुज़र गया मौसम...

फिर वो चेहरा नज़र नहीं आया,
फिर नज़र से उतर गया मौसम...

तितलियाँ बन के उड़ गयीं रातें,
नींद को ख़्वाब कर गया मौसम...

तुम न थे तो मुझे पता न चला,
किधर आया किधर गया मौसम...

2

दिल बुरी तरह से धड़कता रहा,
वो बराबर मुझे ही तकता रहा...

रोशनी सारी रात कम ना हुई,
तारा पलकों पे इक चमकता रहा...

छू गया जब कभी ख़्याल तेरा,
दिल मेरा देर तक धड़कता रहा...

कल तेरा ज़िक्र छिड़ गया घर में,
और घर देर तक महकता रहा...

उसके दिल में तो कोई मैल न था,
मैं ख़ुदा जाने क्यूँ झिझकता रहा...

मीर को पढ़ते पढ़ते सोया था,
रात भर नींद में सिसकता रहा...

3

बेवफा होगा, बावफा होगा,
उससे मिल कर तो देख क्या होगा

बैर मत पालिए चरागों से
दिल अगर बुझ गया तो क्या होगा

सर झुका कर जो बात करता है
तुमसे वो आदमी बड़ा होगा

क़हक़हे जो लुटा रहा था कभी
वो कहीं छुप के रो रहा होगा

उससे मिलना कहाँ मुक़द्दर है
और जी भी लिए तो क्या होगा

राहत एक शब में हो गए हैं रईस
कुछ फक़ीरों से मिल गया होगा

4

अब ना मैं वो हूँ, ना बाकी हैं ज़माने मेरे
फिर भी मशहूर हैं शहरों में फसाने मेरे

ज़िन्दगी है तो नए ज़ख्म भी लग जाएंगे
अब भी बाक़ी हैं कई दोस्त पुराने मेरे

आपसे रोज़ मुलाक़ात की उम्मीद नहीं
अब कहाँ शहर में रहते हैं ठिकाने मेरे

उम्र के राम ने साँसों का धनुष तोड़ दिया
मुझ पे एहसान किया आज ख़ुदा ने मेरे

आज जब सो के उठा हूँ तो ये महसूस हुआ
सिसकियाँ भरता रहा कोई सिरहाने मेरे

5

तू शब्दों का दास रे जोगी
तेरा क्या विश्वास रे जोगी

इक दिन विष का प्याला पी जा
फिर न लगेगी प्यास रे जोगी

ये साँसों का बंदी जीवन
किसको आया रास रे जोगी

विधवा हो गयी सारी नगरी
कौन चला बनबास रे जोगी

पुर आई थी मन की नदिया
बह गए सब एहसास रे जोगी

एक पल के सुख की क्या क़ीमत
दुख हैं बारह मास रे जोगी

बस्ती पीछा कब छोड़ेगी
लाख धरे सन्यास रे जोगी

6

ये ज़िन्दगी किसी गूंगे का ख़्वाब है बेटा
संभल के चलना के रस्ता ख़राब है बेटा

हमारा नाम लिखा है पुराने किलओं पर
मगर हमारा मुकद्दर ख़राब है बेटा

गुनाह करना किसी बेगुनाह की ख़ातिर
मेरी निगाह में कार-ए-सवाब[1] है बेटा

अब और ताश के पत्तों की सीढ़ीयों पे न चढ़
के इसके आगे ख़ुदा का अज़ाब है बेटा

हमारे सेहन की मेहंदी पे है नज़र उसकी
ज़मीनदार की नीयत ख़राब है बेटा

---

1. पुण्य का काम

7

जो मनसबों[1] के पुजारी पहन के आते हैं
कुलाह[2] तौक़[3] से भारी पहन के आते हैं

अमीर ए शहर तेरी तरह क़ीमती पोशाक
मेरी गली में भिखारी पहन के आते हैं

यही अक़ीक़[4] थे शाहों के ताज की ज़ीनत
जो उँगलियों में मदारी पहन के आते हैं

हमारे ज़िस्म के दाग़ों पे तब्सरा करने
क़मीज़ें लोग हमारी पहन के आते हैं

इबादतों का तहफ़्फ़ुज़[5] भी उनके ज़िम्मे है
जो मस्जिदों में सफ़ारी पहन के आते हैं

---

1. ऊंचे पद
2. सर पर पहनी पगड़ी/ताज
3. गले में डाली हुई बेड़ियाँ
4. रंग बिरंगे पत्थर
5. संरक्षण

8

मस्जिद ख़ाली ख़ाली है
बस्ती में क़व्वाली है

हम जैसों से ख़ाली है
दुनिया क़िस्मत वाली है

नूर जहाँ है पहलू में
दिल में सब्ज़ी वाली है

माज़ी हो या मुस्तक़बिल
अपनी वही बेहाली है

दरिया फिर भी दरिया है
जग ने प्यास बुझा ली है

दुनिया पहले पत्थर थी
हमने मोम बना ली है

साया साया ढूंड उसे
जिसने धूप निकाली है

कुछ तब्दीली हो यारों
बरसों से ख़ुशहाली है

9

कितनी पी, कैसे कटी रात मुझे होश नहीं
रात के साथ गई बात मुझे होश नहीं

शब गुज़ार आया हूँ मस्जिद में के मैखाने में
मुझसे पुछो ना सवालात मुझे होश नहीं

मुझको ये भी नहीं मालूम के जाना है कहाँ
थाम ले कोई मेरा हाथ मुझे होश नहीं

आँसुओं और शराबों में गुज़र है अब तो
मैंने कब देखी थी बरसात मुझे होश नहीं

जाने क्या टूटा है पैमाना कि दिल है मेरा
बिखरे-बिखरे हैं ख़यालात मुझे होश नहीं

मैंने बेहोशी के आलम में बका है क्या-क्या
दिल पे लेना न कोई बात मुझे होश नहीं

10

सूरज, सितारे चाँद मेरे साथ में रहे
जब तक तुम्हारे हाथ मेरे हाथ में रहे

साँसों की तरह साथ रहे सारी ज़िन्दगी
तुम ख़्वाब से गए तो ख़्यालात में रहे

हर बूँद तीर बन के उतरती है रूह में
तन्हा मेरी तरह कोई बरसात में रहे

हर रंग हर मिज़ाज में पाया है आपको
मौसम तमाम आपकी ख़िदमात में रहे

शाखों से टूट जाएँ वो पत्ते नहीं है हम
आँधी से कोई कह दे के औक़ात में रहे

11

दिए बुझे हैं मगर दूर तक उजाला है
ये आप आए हैं या दिन निकलने वाला है

नई सहर है नया ग़म नया उजाला है
रज़ाई छोड़ दो अब दिन निकलने वाला है

ख़्याल में भी तेरा अक़्स देखने के बाद
जो शख़्स होश गँवा दे वो होश वाला है

जवाब देने के अन्दाज़ भी निराले हैं
सलाम करने का अन्दाज़ भी निराला है

सुनहरी धूप है सदक़ा तेरे तबस्सुम का
ये चाँदनी तेरी परछाईं का उजाला है

है तेरे पैरों की आहट ज़मीन की गर्दिश
ये आसमां तेरी अंगड़ाई का हवाला है

12

मुश्किल से हाथों में खज़ाना पड़ता है
पहले कुछ दिन आना-जाना पड़ता है

ख़ुश रहना आसान नहीं है दुनिया में
दुश्मन से भी हाथ मिलाना पड़ता है

यूँ ही नहीं रहता है उजाला बस्ती में
चाँद बुझे तो घर भी जलाना पड़ता है

तू भी फलों का दावेदार निकल आया,
बेटा पहले पेड़ लगाना पड़ता है

मुश्किल फ़न है ग़ज़लों की रोटी खाना
बहरों को भी शेर सुनाना पड़ता है

13

क्या खरीदोगे ये बाज़ार बहुत महंगा है
प्यार की ज़िद न करो प्यार बहुत महंगा है

चाहने वालों की एक भीड़ लगी रहती है
आज-कल आपका दीदार बहुत महंगा है

इश्क़ में वादा निभाना कोई आसान नहीं
करके पछताओगे इक़रार बहुत महंगा है

आज तक तुमने खिलौने ही ख़रीदे होंगे
दिल है ये दिल मेरे सरकार बहुत महंगा है

हम सुकूँ ढूंढने आए थे दुकानों में मगर
फिर कभी देखेंगे इस बार बहुत महंगा है

14

न वो रास्ते न वो हमसफ़र न वो हम रहे न वो तुम रहे
वो जो शह्र था है वही मगर न वो हम रहे न वो तुम रहे

जो हमारे दिल पे गुज़र गई जो तुम्हारे दिल पे गुज़र गई
न हमें पता न तुम्हें खबर न वो हम रहे न वो तुम रहे

कभी हम तुम्हारे क़रीब थे कभी तुम हमारे हबीब थे
मगर अब नहीं कोई मोतबर[1] न वो हम रहे न वो तुम रहे

कभी रात मन्नते माँगना कभी सुबह देर से जागना
न वो शब रही न रही सहर न वो हम रहे न वो तुम रहे

जो तआल्लुक़ात थे क्या हुए जो तसव्वुरात थे क्या हुए
के वफ़ाए इश्क़ के मोड़ पर न वो हम रहे न वो तुम रहे

---

1. भरोसे के लायक

15

आग में फूलने-फलने का हुनर जानते हैं
न बुझा हमको के जलने का हुनर जानते हैं

हर नए रंग में ढलने का हुनर जानते हैं
लोग मौसम में बदलने का हुनर जानते हैं

आप ने सिर्फ़ गिराने की अदा सीखी है
और हम गिर के संभलने का हुनर जानते हैं

क्या समेटेगा हमें वक़्त का गहरा दरिया
हम किनारों से उबलने का हुनर जानते हैं

चाल चलने में महारत है यहाँ लोगों को
और हम बचके निकलने का हुनर जानते हैं

16

टूटा हुआ दिल तेरे हवाले मेरे अल्लाह
इस घर को तबाही से बचाले मेरे अल्लाह

दुनिया के रिवाजों को भी तोड़ दूं लेकिन
इक शख़्स मुझे अपना बनाले मेरे अल्लाह

वो साथ वो दिन-रात वो नग़मात वो लम्हे
लौटा दे मुझे मेरे उजाले मेरे अल्लाह

मैं जिसके लिए सारे ज़माने से ख़फा हूँ
वो ख़ुद ही मुझे आ के मना ले मेरे अल्लाह

मैं किसको सदा दूँ जो मेरे ख़्वाब में आकर
काँटे मेरी पलकों से निकाले मेरे अल्लाह

17

आप हमसे बेख़बर ऐसे न थे
दिल के दुश्मन थे मगर ऐसे न थे

तुम न थे तो ज़िन्दगी बेरंग थी
रात-दिन शाम-ओ-सहर ऐसे न थे

मन्ज़िलें दुश्वार थीं कल भी मगर
रास्ते और हमसफ़र ऐसे न थे

अब तो हर खिड़की में रोशन चाँद है
पहले इस बस्ती में घर ऐसे न थे

तेरे दर से उठ के ये हालत हुई
कल तलक हम दर बदर ऐसे न थे

18

ज़िन्दगी नाम को हमारी है
आखरी सांस भी तुम्हारी है

तेरी चाहत कहाँ पे ले आई
तुझसे मिलकर भी बेक़रारी है

मुझसे पुछो चमक सितारों की
मैंने रो-रो के शब गुज़ारी है

आपके हाथ में लकीरें हैं
वरना तक़दीर तो हमारी है

एक तस्वीर में हैं दो शक्लें
या हमारी है या तुम्हारी है

दिल मेरा तोड़ते हो लो तोड़ो
चीज़ मेरी नहीं तुम्हारी है

19

प्यार का रिश्ता कितना गहरा लगता है
हर चेहरा अब तेरा चेहरा लगता है

तुमने हाथ रखा था मेरी आँखों पर
उस दिन से हर ख़्वाब सुनहरा लगता है

उस तक आसानी से पहुँचना मुश्किल है
चाँद के दर पे रात का पहरा लगता है

जब से तुम परदेस गए हो बस्ती में
चारों तरफ़ सहरा ही सेहरा लगता है

मजबूरी रोने भी नही देती मुझको
दरियाओं पे आज भी पहरा लगता है

20

अभी दिल में दर्द कम है, अभी आँख तर नहीं है
तेरे ग़म से मेरा रिश्ता अभी मोतबर नहीं है

है ज़माने भर में चर्चे मेरी सर बुलन्दियों के
ये इनायतें हैं तेरी ये मेरा हुनर नहीं है

तुझे लिख के जो न चूमे तुझे देख कर न झूमे
वो ज़ुबां ज़ुबां नहीं है वो नज़र नज़र नहीं है

ये ज़माना लाख गुज़रे नए हादसों से लेकिन
मैं तेरी पनाह में हूँ मुझे कोई डर नहीं है

ये जो आख़िरी सफ़र है यही हासिल-ए-सफ़र है
मगर इस सफ़र में अपना कोई हमसफ़र नहीं है

चुनिंदा ग़ज़लें

1

उँगलियाँ यूँ न सब पर उठाया करो
ख़र्च करने से पहले कमाया करो

ज़िन्दगी क्या है ख़ुद ही समझ जाओगे
बारिशों में पतंगें उड़ाया करो

दोस्तों से मुलाक़ात के नाम पर
नीम की पत्तियों को चबाया करो

शाम के बाद जब तुम सहर देख लो
कुछ फ़क़ीरों को खाना खिलाया करो

अपने सीने पे दो गज़ ज़मीं बाँध कर
आसमानों का ज़र्फ़[1] आज़माया करो

चाँद सूरज कहाँ, अपनी मन्ज़िल कहाँ
ऐसे वैसों को मुँह मत लगाया करो

---

1. क्षमता

2

लोग हर मोड़ पे रुक रुक के सँभलते क्यूँ हैं
इतना डरते हैं तो फिर घर से निकलते क्यूँ हैं

मैक़दा ज़र्फ के मीज़ान[1] का पैमाना है
ख़ाली शीशों की तरह लोग उछलते क्यूँ हैं

मोड़ होता है जवानी का सँभलने के लिये
और सब लोग यहीं आके फिसलते क्यूँ हैं

नींद से मेरा तआल्लुक ही नहीं बरसों से
ख़्वाब आ आके मेरी छत पे टहलते क्यूँ हैं

मैं न जुगनू हूँ दिया हूँ न कोई तारा हूँ
रोशनी वाले मेरे नाम से जलते क्यूँ हैं

---

1. तराजू

3

सबको रूसवा बारी बारी किया करो
हर मौसम में फ़तवे जारी किया करो

रातों का नींदों से रिश्ता टूट चुका
अपने घर की पहरेदारी किया करो

क़तरा क़तरा शबनम गिन कर क्या होगा
दरियाओं की दावेदारी किया करो

रोज़ क़सीदे लिक्खो गूंगे बहरों के
फ़ुरसत हो तो ये बेगारी किया करो

शब भर आने वाले दिन के ख़्वाब बनो
दिन भर फ़िक्र-ए-शब बेदारी किया करो

चाँद ज़्यादा रौशन है तो रहने दो
जुगनू भय्या जी मत भारी किया करो

जब जी चाहे मौत बिछा दो बस्ती में
लेकिन बातें प्यारी-प्यारी किया करो

रात बदन दरिया में रोज़ उतरती है
इस कश्ती में ख़ूब सवारी किया करो

रोज़ वही एक कोशिश ज़िन्दा रहने की
मरने की भी कुछ तय्यारी किया करो

काग़ज़ को सब सौंप दिया ये ठीक नहीं
शेर कभी ख़ुद पर भी तारी किया करो

4

अँधेरे चारों तरफ साँए साँए करने लगे
चिराग़ हाथ उठा कर दुआएँ करने लगे

तरक़्क़ी कर गये बीमारियों के सौदागर
ये सब मरीज़ हैं जो अब दवाएँ करने लगे

ज़मीं पर आ गये आँखों से टूट कर आँसू
बुरी ख़बर है फ़रिश्ते ख़ताएँ करने लगे

झुलस रहे हैं यहाँ छाँव बांटने वाले
वह धूप है के शजर इल्तिजाएँ करने लगे

अजीब रंग था मजलिस का, ख़ूब महफ़िल थी
सफ़ेद पोश उठे काँए-काँए करने लगे

5

हर मुसाफ़िर है सहारे तेरे
कश्तियाँ तेरी कनारे तेरे

तेरे दामन को ख़बर दे कोई
टूटते रहते हैं तारे तेरे

धूप दरिया में रवानी थी बहुत
बह गए चाँद सितारे तेरे

तेरे दरवाज़े को जुम्बिश[1] न हुई
मैंने सब नाम पुकारे तेरे

बे तलब आँखों में क्या क्या कुछ है
वह समझता है इशारे तेरे

कब पसीजेंगे यह बहरे बादल
हैं शजर हाथ पसारे तेरे

मेरा इक पल भी मुझे मिल न सका
मैंने दिन रात गुज़ारे तेरे

तेरी आँखें तेरी बीनाई है
तेरे मन्ज़र हैं, नज़ारे तेरे

यह मेरी प्यास बता सकती है
क्यों समन्दर हुए खारे तेरे

जो भी मनसूब[2] तेरे नाम से थे
मैंने सब क़र्ज़ उतारे तेरे

तूने लिखा मेरे चेहरे पे धुआँ
मैंने आइने संवारे तेरे

और मेरा दिल वही मुफ़लिस का चिराग़
चाँद तेरा है सितारे तेरे

---

1. हरकत
2. नामित

6

अगर खिलाफ़ हैं होने दो जान थोड़ी है
ये सब धुआँ है कोई आसमान थोड़ी है

लगेगी आग तो आएँगे घर कई ज़द में
यहाँ पे सिर्फ़ हमारा मकान थोड़ी है

मैं जानता हूँ कि दुश्मन भी कम नहीं लेकिन
हमारी तरह हथेली पे जान थोड़ी है

जो आज साहिब-ए-मसनद[1] हैं कल नहीं होंगे
किरायेदार हैं ज़ाती मकान थोड़ी है

हमारे मुँह से जो निकले वही सदाक़त[2] है
हमारे मुँह में तुम्हारी ज़बान थोड़ी है

सभी का ख़ून है शामिल यहाँ की मिट्टी में
किसी के बाप का हिन्दुस्तान थोड़ी है

---

1. सत्ताधीश
2. सच्चाई

7

समन्दरों में मुआफ़िक़ हवा चलाता है
जहाज़ ख़ुद नहीं चलते, ख़ुदा चलाता है

ये जाके मील के पत्थर पे कोई लिख आये
वो हम नहीं हैं जिन्हें रास्ता चलाता है

तुझे ख़बर नहीं मेले में घूमने वाले
तेरी दुकान कोई दूसरा चलाता है

वो पाँच वक़्त नज़र आता है नमाज़ों में
मगर सुना है कि शब में जुआ चलाता है

ये लोग पाँव नहीं ज़हन से अपाहिज हैं
उधर चलेंगे जिधर रहनुमा चलाता है

हम अपने बूढ़े चराग़ों पे ख़ूब इतराये
और उसको भूल गये जो हवा चलाता है

8

तेरे वादे की तेरे प्यार की मोहताज नहीं
ये कहानी किसी किरदार की मोहताज नहीं

आसमां ओढ़ के सोए हैं खुले मैदां में
अपनी ये छत किसी दीवार की मोहताज नहीं

ख़ाली कशकौल[1] पे इतराई हुई फिरती है
ये फक़ीरी किसी दस्तार की मोहताज नहीं

ख़ुद क़फ़ीली का हुनर सीख लिया है मैंने
ज़िन्दगी अब किसी सरकार की मोहताज नहीं

मेरी तहरीर है चस्पां मेरी पेशानी पर
अब ज़ुबाँ ज़िल्लत-ए-इज़हार की मोहताज नहीं

लोग होठों पे सजाए हुए फिरते हैं मुझे
मेरी शोहरत किसी अख़बार की मोहताज नहीं

रोज़ आबाद नये शहर किया करती है
शायरी अब किसी दरबार की मोहताज नहीं

मेरे अख़लाक की एक धूम है बाज़ारों में
ये वह शै है जो ख़रीदार की मोहताज नहीं

इसे तूफाँ ही किनारे से लगा देते हैं
मेरी कश्ती किसी पतवार की मोहताज नहीं

मैंने मुल्कों की तरह लोगों के दिल जीते हैं
ये हुकूमत किसी तलवार की मोहताज नहीं

1. भिक्षा पात्र

9

रोज़ तारों को नुमाइश में ख़लल पड़ता है
चाँद पागल है अँधेरे में निकल पड़ता है

एक दीवाना मुसाफ़िर है मेरी आँखों में
वक़्त-बे-वक़्त ठहर जाता है, चल पड़ता है

अपनी ताबीर के चक्कर में मेरा जागता ख़्वाब
रोज़ सूरज की तरह घर से निकल पड़ता है

रोज़ पत्थर की हिमायत में ग़ज़ल कहते हैं
रोज़ शीशों से कोई काम निकल पड़ता है

उसकी याद आई है, साँसों ज़रा आहिस्ता चलो
धड़कनों से भी इबादत में ख़लल पड़ता है

10

अब अपनी रूह के छालों का कुछ हिसाब करूँ
मैं चाहता था चिराग़ों को आफ़ताब करूँ

बुतों से मुझको इजाज़त अगर कभी मिल जाए
तो शहर भर के ख़ुदाओं को बेनक़ाब करूँ

मैं करवटों के नए ज़ाविए लिखूँ शब भर
ये इश्क़ है तो कहाँ ज़िन्दगी अज़ाब करूँ

है मेरे चारों तरफ़ भीड़ गूँगे-बहरों की
किसे ख़तीब[1] बनाऊँ किसे ख़िताब करूँ

उस आदमी को बस एक धुन सवार रहती है
बहुत हसीं है ये दुनिया इसे ख़राब करूँ

ये ज़िन्दगी जो मुझे क़र्ज़दार करती है
कहीं अकेले में मिल जाए तो हिसाब करूँ

---

1. उपदेशक

11

धूप बहुत है मौसम जल थल भेजो ना
बाबा मेरे नाम का बादल भेजो ना

मोलसरी की शाख़ों पर भी दिए जलें
शाख़ों का केसरिया आँचल भेजो ना

नन्ही मुन्नी सब चहकारें कहाँ गयीं
मोरों के पैरों की पायल भेजो ना

बस्ती बस्ती दहशत किसने बो दी है
गलियों बाज़ारों की हलचल भेजो ना

सारे मौसम एक उमस के आदी हैं
छाँव की ख़ुशबू, धूप का सन्दल भेजो ना

मैं बस्ती में आख़िर किस से बात करूँ
मेरे जैसा कोई पागल भेजो ना

12

शराब छोड़ दी तुमने कमाल है ठाकुर
मगर ये हाथ में क्या लाल-लाल है ठाकुर

कई मलूल[1] से चेहरे तुम्हारे गाँव में हैं
सुना है तुम को भी इस का मलाल है ठाकुर

ख़राब हालों का जो हाल था ज़माने से
तुम्हारे फैज़ से अब भी बहाल है ठाकुर

इधर तुम्हारे ख़ज़ानें जवाब देते हैं
उधर हमारी अना का सवाल है ठाकुर

किसी ग़रीब दुपट्टे का क़र्ज है उस पर
तुम्हारे पास जो रेशम की शाल है ठाकुर

दुआ को नन्हे गुलाबों ने हाथ उठाये हैं
बस अब यहीं से तुम्हारा ज़वाल है ठाकुर

---

1. दुखी

13

किसने दस्तक दी ये दिल पर कौन है
आप तो अन्दर हैं, बाहर कौन है

रोशनी ही रोशनी है हर तरफ़
मेरी आँखों में मुनव्वर कौन है

आसमां झुक-झुक के करता है सवाल
आप के क़द के बराबर कौन है

हम रखेंगे अपने अश्कों का हिसाब
पूछने वाला समुन्दर कौन है

सारी दुनिया हैरती है किस लिये
दूर तक मंज़र ब मंज़र कौन है

मुझसे मिलने ही नहीं देता मुझे
क्या पता ये मेरे अन्दर कौन है

14

हाथ ख़ाली हैं तेरे शहर से जाते जाते
जान होती तो मेरी जान, लुटाते जाते

अब तो हर हाथ का पत्थर हमें पहचानता है
उम्र गुज़री है तेरे शहर में आते जाते

रेंगने की भी इजाज़त नहीं हमको वरना
हम जिधर जाते नए फूल खिलाते जाते

मुझ को रोने का सलीक़ा भी नहीं है शायद
लोग हँसते हैं मुझे देख के आते जाते

अब के मायूस हुआ यारों को रुख़सत करके
जा रहे थे तो कोई ज़ख़्म लगाते जाते

हम से पहले भी मुसाफ़िर कई गुज़रे होंगे
कम से कम राह के पत्थर तो हटाते जाते

15

ख़ाक से बढ़कर कोई दौलत नई होती
छोटी मोटी बात पे हिजरत नई होती

पहले दीप जलें तो चर्चे होते थे
और अब शहर जलें तो हैरत नई होती

तारीखों की पेशानी पर मुहर लगा
ज़िन्दा रहना कोई करामत नई होती

कोई और ऊठा रखता है छत का बोझ
दीवारों में इतनी ताक़त नई होती

सोच रहा हूं आख़िर कब तक जीना है
मर जाता तो इतनी फ़ुरसत नई होती

रोटी की गोलाई नापा करता है
इसीलिये तो घर में बरकत नई होती

हमने ही कुछ लिखना पढ़ना छोड़ दिया
वरना ग़ज़ल की इतनी क़िल्लत नई होती

मिसवाकों[1] से चाँद का चेहरा छूता है
बेटा इतनी सस्ती जन्नत नई होती

बाज़ारों में ढूँढ रहा हूँ वह चीज़ें
जिन चीज़ों की कोई कीमत नई होती

कोई क्या दे राय हमारे बारे में
ऐसे वैसों की तो हिम्मत नई होती

1. एक खास किस्म के पेड़ की डाली, इस्लामी मान्यता के अनुसार उससे दाँत साफ़ किए जाने चाहिए

16

हँसते रहते हैं मुसलसल हम तुम
हों न जाएँ कहीं पागल हम तुम

जैसे दरिया किसी दरिया से मिले
आओ! हो जाएँ मुकम्मल हम तुम

उड़ती फिरती है हवाओं में ज़मीं
रेंगते फिरते हैं पैदल हम तुम

प्यास सदियों की लिए आँखों में
देखते रहते हैं बादल हम तुम

धूप हमने ही उगाई है यहाँ
हैं इसी राह का पीपल हम तुम

शहर की हद ही नहीं आती है
काटते रहते हैं जंगल हम तुम

17

नींदें क्या-क्या ख़्वाब दिखाकर ग़ायब हैं
आँखें तो मौजूद हैं मंज़र ग़ायब हैं

बाक़ी जितनी चीज़ें थीं मौजूद हैं सब
नक़्शे में दो-चार समुन्दर ग़ायब हैं

जाने ये तस्वीर में किसका लश्कर है
हाथों में शमशीरें हैं सर ग़ायब हैं

ग़ालिब भी है बचपन भी है शहरों में
मजनूं भी है लेकिन पत्थर ग़ायब हैं

धन्धे बाज़ मुजाविर हाकिम बन बैठे
दरगाहों से मस्त क़लन्दर ग़ायब हैं

दरवाज़ों पर दस्तक दें तो कैसे दें
घर वाले मौजूद मगर घर ग़ायब हैं

18

मौसमों का ख़्याल रक्खा करो
कुछ लहू में उबाल रक्खा करो

ज़िन्दगी रोज़ मरती रहती है
ठीक से देख भाल रक्खा करो

सब लकीरों पे छोड़ रक्खा है
आप भी कुछ कमाल रक्खा करो

याद करते रहा करो माज़ी
एक एक पल उजाल रक्खा करो

जाने कब सच का सामना हो जाए
कोई रस्ता निकाल रक्खा करो

ग़ालिबों को रखो दिमागों में
दिल यग़ाना मिसाल रक्खा करो

सुलह करते रहा करो हर पल
दुश्मनों को निढाल रक्खा करो

ख़ाली ख़ाली उदास उदास आँखें
इन में कुछ ख़्वाब पाल रक्खा करो

फिर वह चाकू चला नहीं सकता
हाथ गर्दन में डाल रक्खा करो

लाख सूरज से दोस्ताना हो
चन्द जुगनू भी पाल रक्खा करो

19

दोस्ती जब किसी से की जाये
दुश्मनों की भी राय ली जाये

मौत का ज़हर है फ़िज़ाओं में
अब कहाँ जाके साँस ली जाये

बस इसी सोच में हूँ डूबा हुआ
ये नदी कैसे पार की जाये

अगले वक़्तों के ज़ख्म भरने लगे
आज फिर कोई भूल की जाये

लफ़्ज़ धरती पे सर पटकते हैं
गुम्बदों में, सदा न दी जाये

बोतलें खोल के तो पी बरसों
आज दिल खोल कर भी पी जाये

20

कभी दिमाग़, कभी दिल, कभी नज़र में रहो
ये सब तुम्हारे ही घर हैं, किसी भी घर में रहो

जला न लो कहीं हमदर्दियों में अपना वजूद
गली में आग लगी हो तो अपने घर में रहो

तुम्हें पता ये चले घर की राहतें क्या हैं
हमारी तरह अगर चार दिन सफ़र में रहो

है अब ये हाल कि दर दर भटकते फिरते हैं
ग़मों से मैंने कहा था कि, मेरे घर में रहो

किसी को ज़ख़्म दिये हैं किसी को फूल दिये
बुरी हो, चाहे भली हो, मग़र ख़बर में रहो

21

ये हादसा तो किसी दिन गुज़रने वाला था
मैं बच भी जाता, तो इक रोज़ मरने वाला था

बुलन्दियों का नशा टूट कर बिखरने लगा
मेरा जहाज़ ज़मीं पर उतरने वाला था

मेरा नसीब, मेरे हाथ कट गये वर्ना
मैं तेरी माँग में सिन्दूर भरने वाला था

ज़मीं से अब के बड़े फ़ासले उगे वर्ना
वो भाई, मुझसे बड़ा प्यार करने वाला था

मेरे चराग़, मेरी शब, मेरी मुंडेरें हैं
मैं कब शरीर हवाओं से डरने वाला था

22

बढ़ गई है कि घट गई दुनिया
मेरे नक़्शे से कट गई दुनिया

तितलियों में समा गए मंज़र
मुट्ठियों में सिमट गई दुनिया

अपने रस्ते बनाए ख़ुद मैंने
मेरे रस्ते से हट गई दुनिया

एक नागिन का ज़हर है मुझमें
मुझको डसकर पलट गई दुनिया

कितने ख़ानों में बँट गए हम-तुम
कितने हिस्सों में बँट गई दुनिया

जब भी दुनिया को छोड़ना चाहा
मुझसे आकर लिपट गई दुनिया

23

सर पर बोझ अँधियारों का है मौला ख़ैर
और सफ़र कुहसारों[1] का है मौला ख़ैर

दुश्मन से तो टक्कर ली है सौ सौ बार
सामना अब के यारों का है मौला ख़ैर

इस दुनिया में तेरे बाद मेरे सर पर
साया रिश्तेदारों का है मौला ख़ैर

दुनिया से बाहर भी निकल कर देख चुके
सब कुछ दुनियादारों का है मौला ख़ैर

और क़यामत मेरे चराग़ों पर टूटी
झगड़ा चाँद सितारों का है मौला ख़ैर

लिख रक्खा है हुजरा[2] पीर फ़क़ीरों का
और मंज़र दरबारों का है मौला ख़ैर

चौराहों पर वर्दी वाले आ पहुँचे
मौसम फिर त्यौहारों का है मौला ख़ैर
एक ख़ुदा है, एक पयम्बर एक किताब
झगड़ा तो दस्तारों का है मौला ख़ैर
वक़्त मिला तो मस्जिद भी हो आएँगे
बाक़ी काम मज़ारों का है मौला ख़ैर
मैंने अलिफ़ से ये[3] तक ख़ुश्बू बिखरा दी
लेकिन गाँव गँवारों का है मौला ख़ैर

1. पर्वत श्रंखलाएँ
2. फ़कीर की कुटिया
3. उर्दू वर्ण लिपि का पहला और आखिरी अक्षर

24

हौसले ज़िन्दगी के देखते हैं
चलिए कुछ रोज़ जी के देखते हैं

नींद पिछली सदी से ज़ख़्मी है
ख़्वाब अगली सदी के देखते हैं

रोज़ हम इस अँधेरी धुँध के पार
काफ़िले रोशनी के देखते हैं

धूप इतनी कराहती क्यों है
छाँव के जख़्म सी के देखते हैं

टकटकी बाँध ली है आँखों ने
रास्ते वापसी के देखते हैं

बारिशों से तो प्यास बुझती नहीं
आइए ज़हर पी के देखते हैं

25

दरबदर जो थे वो दीवारों के मालिक हो गये
मेरे सब दरबान, दरबारों के मालिक हो गये

लफ़्ज़ गूंगे हो चुके तहरीर अन्धी हो चुकी
जितने मुख़बिर थे वह अख़बारों के मालिक हो गये

लाल सूरज आसमां से घर की छत पर आ गया
जितने थे बेकार सब कारों के मालिक हो गये

और अपने घर में हम बैठे रहे मशअल बकफ़[1]
चन्द जुगनू चाँद और तारों के मालिक हो गये

देखते ही देखते कितनी दुकाने खुल गयीं
बिकने आए थे वह बाज़ारों के मालिक हो गये

सर बकफ़ थे तो सरों से हाथ धोना पड़ गया
सर झुकाए थे वह दस्तारों के मालिक हो गये

---

1. मशाल की रोशनी में

26

ज़िन्दगी उम्र से बड़ी तो नहीं
ये कहीं मौत की घड़ी तो नहीं

ये अलग बात हम भटक जाएँ
वैसे दुनिया बहुत बड़ी तो नहीं

टूट सकता है ये तअल्लुक़ भी
इश्क़ है कोई हथकड़ी तो नहीं

आते-आते ही आएगी मंज़िल
रास्ते में कहीं पड़ी तो नहीं

एक खटका सा है बिछड़ने का
ये मुलाक़ात की घड़ी तो नहीं

एक जंगल है दूर-दूर तलक
ये मेरे शहर की कड़ी तो नहीं

27

पहली शर्त जुदाई है
इश्क़ बड़ा हरजाई है

गुम हैं होश हवाओं के
किसकी ख़ुशबू आई है

ख़्वाब क़रीबी रिश्तेदार
लेकिन नींद पराई है

चाँद तराशे सारी उम्र
तब कुछ धूप कमाई है

मैं बिछड़ा हूँ डाली से
दुनिया क्यों मुरझाई है

दिल पर किसने दस्तक दी
तुम हो या तन्हाई है

दरिया दरिया नाप चुके
मुट्ठी भर गहराई है

सूरज टूट के बिखरा था
रात ने ठोकर खाई है

कोई मसीहा क्या जाने
जख़्म है या गहराई है

वाह रे पागल वाह रे दिल
अच्छी क़िस्मत पाई है

28

हों लाख ज़ुल्म मगर बद-दुआ नहीं देंगे
ज़मीन माँ है ज़मीं को दग़ा नहीं देंगे

हमें तो सिर्फ़ जगाना है सोने वालों को
जो दर खुला है वहाँ हम सदा नहीं देंगे

रिवायतों की सफ़हें तोड़ कर बढ़ो, वर्ना
जो तुमसे आगे हैं वो रास्ता नहीं देंगे

ये हमने आज से तय कर लिया कि हम तुझको
करेंगे याद कि जब तक भुला नहीं देंगे

शराब पी के बड़े तजुर्बे हुए हैं हमें
शरीफ़ लोगों को हम मशविरा नहीं देंगे

29

जाके ये कहदे कोई शोंलों से, चिंगारी से
फूल इस बार खिले हैं बड़ी तैयारी से

भाई चारे से, मोहब्बत से, वफ़ादारी से
ज़िन्दगी हमने गुज़ारी है, अदाकारी से

ज़हन में जब भी तेरे ख़त की इबारत चमकी
एक ख़ुशबू सी निकलने लगी अलमारी से

शाहज़ादे से मुलाक़ात तो नामुमकिन है
चलिये, आ जाते हैं मिलकर किसी दरबारी से

अपनी हर साँस को नीलाम किया है मैंने
लोग आसान हुये हैं बड़ी दुशवारी से

30

दोस्त है तो मेरा कहा भी मान
मुझसे शिकवा भी कर, बुरा भी मान

दिल को सबसे बड़ा हरीफ़[1] समझ
और इसी संग को ख़ुदा भी मान

मैं कभी सच भी बोल देता हूँ
गाहे गाहे, मेरा कहा भी मान

याद कर, देवताओं के अवतार
हम फ़क़ीरों का सिलसिला भी मान

काग़ज़ों की खमोशियाँ भी पढ़
एक एक हर्फ़ को सदा भी मान

आज़माईश में क्या बिगड़ता है
फ़र्ज़ कर, और मुझे भला भी मान

ग़म से बचने की सोच कुछ तरकीब
और इस ग़म को आसरा भी मान

---

1. विरोधी

31

मुझ में कितने राज़ हैं बतलाऊँ क्या?
बन्द एक मुद्दत से हूँ खुल जाऊँ क्या?

आजिज़ी, मिन्नत, खुशामद, इल्तिजा
और मैं क्या-क्या करूँ मर जाऊँ क्या?

कल यहाँ मैं था जहाँ तुम आज हो
मैं तुम्हारी ही तरह इतराऊँ क्या?

तेरे जलसे में तेरा परचम लिये
सैकड़ों लाशें भी हैं गिनवाऊँ क्या?

एक पत्थर है वह मेरी राह का
गर न ठुकराऊँ तो ठोकर खाऊँ क्या?

फिर जगाया तूने सोये शेर को
फिर वही लहजा दराज़ी! आऊँ क्या?

32

बूढ़े हुए यहाँ कई अय्याश बम्बई
तू आज भी जवान है शाबाश बम्बई

पूछूँ के मेरे बच्चों के ख़्वाबों का क्या हुआ
मिल जाए बम्बई में कहीं काश बम्बई

दिल बैठते हैं दौड़ते घोड़ों के साथ-साथ
सोने की फ़सल बोती है क़लाश[1] बम्बई

दो गज़ ज़मीन भी न मिली दफ़्न के लिये
घर में पड़ी हुई है तेरी लाश बम्बई

हर शख़्स आ के जीत न पायेगा बाज़ियाँ
उलटे छपे हुए हैं तेरे ताश बम्बई

इस शहर में ज़मीन है महँगी बहुत मगर
घर की छतों पे रखती है आकाश बम्बई

---

1. कंगाल

33

जितने अपने थे सब पराए थे
हम हवा को गले लगाए थे

जितनी क़समें थी सब थीं शर्मिंदा
जितने वादे थे सर झुकाए थे

जितने आँसू थे सब थे बेगाने
जितने मेहमाँ थे बिन बुलाए थे

सब किताबें पढ़ी पढ़ाई थीं
सारे क़िस्से सुने सुनाए थे

एक बन्जर ज़मीं के सीने में
मैंने कुछ आसमां उगाए थे

वरना औक़ात क्या थी सायों की
धूप ने हौसले बढ़ाए थे

सिर्फ़ दो घूंट प्यास की ख़ातिर
उम्र भर धूप में नहाए थे

हाशिए पर खड़े हुए हैं हम
हम ने ख़ुद हाशिए बनाए थे

मैं अकेला उदास बैठा था
शाम ने क़हक़हे लगाए थे

है ग़लत उस को बेवफ़ा कहना
हम कहाँ के धुले धुलाए थे

आज कांटो भरा मुक़द्दर है
हम ने गुल भी बहुत खिलाए थे

34

सवाल घर नहीं बुनियाद पर उठाया है
हमारे पाँव की मिट्टी ने सर उठाया है

हमेशा सर पे रही इक चट्टान रिश्तों की
यह बोझ वो है जिसे उम्र भर उठाया है

मेरी ग़ुलेल के पत्थर का कारनामा था
मगर यह कौन है जिसने समर उठाया है

यही ज़मीं में दबाएगा एक दिन हम को
यह आसमान जिसे दोश पर उठाया है

बुलन्दियों को पता चल गया कि फिर मैंने
हवा का टूटा हुआ एक पर उठाया है

महाबली से बग़ावत बहुत ज़रूरी थी
क़दम यह हम ने समझ सोच कर उठाया है

35

हमें दिन रात मरना चाहिए था
मियाँ कुछ कर गुज़रना चाहिए था

बहुत ही ख़ूबसूरत है यह दुनिया
यहाँ कुछ दिन ठहरना चाहिए था

मुझे तूने किनारे से है जाना
समन्दर में उतरना चाहिए था

यहाँ सदियों से तारीकी जमी है
मेरी शब को सहरना चाहिए था

अकेली रात बिस्तर पर पड़ी है
मुझे इस दिन से डरना चाहिए था

डुबो कर मुझ को ख़ुश होता है दरिया
उसे तो डूब मरना चाहिए था

किसी से बेवफाई की है मैंने
मुझे इक़रार करना चाहिए था

यह देखो किरचियाँ हैं आइनों की
सलीक़े से सँवरना चाहिए था

किसी दिन उसकी महफ़िल में पहुँच कर
गुलों में रंग भरना चाहिए था

फ़लक पर तब्सिरा करने से पहले
ज़मीं का क़र्ज़ उतरना चाहिए था

36

बैठे बैठे कोई ख़्याल आया
ज़िन्दा रहने का फिर सवाल आया

कौन दरयाओं का हिसाब रखे
नेकियां, नेकियों में डाल आया

ज़िन्दगी किस तरह गुज़ारते हैं
ज़िन्दगी भर न यह कमाल आया

झूट बोला है कोई आइना
वरना पत्थर में कैसे बाल आया

वह जो दो गज़ ज़मीं थी मेरे नाम
आसमां की तरफ़ उछाल आया

क्यों ये सैलाब सा है आँखों में
मुस्कुराए थे हम, ख़्याल आया

37

मौसम की मनमानी है
आँखों आँखों पानी है

साया साया लिख डालो
दुनिया धूप कहानी है

सब पर हँसते रहते हैं
फूलों की नादानी है

हाय ये दुनिया! हाय ये लोग
हाय! यह सब कुछ फ़ानी है

साथ इक दरिया रख लेना
रस्ता रेगिस्तानी है

कितने सपने देख लिए
आँखों को हैरानी है

दिल वाले अब कम कम हैं
वैसे क़ौम पुरानी है

बारिश, दरिया, साग़र, ओस
आँसू पहला पानी है

तुझ को भूले बैठे हैं
क्या यह कम क़ुरबानी है

दरिया हम से आँख मिला
देखें कितना पानी है

38

यहाँ कब थी जहाँ ले आई दुनिया
यह दुनिया को कहाँ ले आई दुनिया

ज़मीं को आसमानों से मिला कर
ज़मीं पर आसमां ले आई दुनिया

मैं ख़ुद से बात करना चाहता था
ख़ुदा को दरमियाँ ले आई दुनिया

चिराग़ों की लवें सहमी हुई हैं
सुना है आँधियाँ ले आई दुनिया

जहाँ मैं था वहाँ दुनिया कहाँ थी
वहाँ मैं हूँ जहाँ ले आई दुनिया

तवक़्क़ो[1] हमने की थी शाख़े-गुल की
मगर तीरो कमां ले आई दुनिया

---

1. उम्मीद

39

अन्दर का ज़हर चूम लिया धुल के आ गये
कितने शरीफ़ लोग थे सब खुल के आ गये

सूरज से जंग जीतने निकले थे बेवक़ूफ
सारे सिपाही मोम के थे घुल के आ गये

मस्जिद में दूर-दूर कोई दूसरा न था
हम आज अपने आप से मिल जुल के आ गये

नींदों से जंग होती रहेगी तमाम उम्र
आँखों में बन्द ख़्वाब अगर खुल के आ गये

अन्जाने साये फिरने लगे हैं इधर-उधर
मौसम हमारे शहर में काबुल के आ गये

40

कैसा नारा कैसा क़ौल अल्लाह बोल
अभी बदलता है माहौल अल्लाह बोल

कैसे साथी कैसे यार सब मक्कार
सबकी नीयत डावाँ डोल अल्लाह बोल

जैसा गाहक वैसा माल दे कर टाल
काग़ज़ में अंगारे तौल अल्लाह बोल

इन्सानों से इन्सानों तक एक सदा
क्या तातारी क्या मंगोल अल्लाह बोल

साँसों पर लिख रब का नाम सुबह शाम
यही वज़ीफा है अनमोल अल्लाह बोल

सच्चाई का लेकर जाप धरती नाप
दिल्ली हो या आसनसोल अल्लाह बोल

दल्लालों से नाता तोड़ सब को छोड़
भेज कमीनों पर लाहौल अल्लाह बोल

हर चेहरे के सामने रख दे आईना
नोच ले हर चेहरे का खोल अल्लाह बोल

शाख़-ए-सहर पर महके फूल अज़ानों के
फैंक रज़ाई आँखें खोल अल्लाह बोल

41

मौक़ा है इस बार रोज़ मना त्यौहार अल्लाह बादशाह
अपनी है सरकार सातों दिन इतवार अल्लाह बादशाह

तेरी ऊँची ज़ात, लश्कर तेरे साथ, तेरे सौ सौ हाथ
तू भी है तैयार हम भी हैं तैयार अल्लाह बादशाह

सबकी अपनी फौज, ये मस्ती वह मौज, सब हैं राजा भोज
शेख़, मुग़ल, अंसार, सब ज़ेहनी बीमार अल्लाह बादशाह

दिल्ली ता लाहौर, जंगल चारों ओर, जिसको देखो चोर
काबुल और कंधार तोड़ दे ये दीवार अल्लाह बादशाह

फ़र्क़ न इनके बीच, ये बन्दर वह रीछ, सबकी रस्सी खींच
सारे है मक्कार, सबको ठोकर मार अल्लाह बादशाह

पढ़े लिखे बेकार, दर दर हैं फ़नकार, आलिम फ़ाजिल ख़्वार
जाहिल, ढोर, गंवार, क़ौम के हैं सरदार अल्लाह बादशाह

42

पुराने दांव पर हर दिन नये आँसू लगाता है
वह अब भी एक फटे रूमाल पर ख़ुशबू लगाता है

उसे कह दो के ये ऊँचाईयाँ मुश्किल से मिलती हैं
वह सूरज के सफ़र में मोम के बाज़ू लगाता है

मैं काली रात के तेज़ाब से सूरज बनाता हूँ
मेरी चादर में ये पेवन्द एक जुगनूं लगाता है

यहाँ लक्ष्मण की रेखा है न सीता है मगर फिर भी
बहुत फेरे हमारे घर के एक साधू लगाता है

न जाने ये अनोखा फ़र्क़ उसमें किस तरह आया
वह अब कालर में फूलों की जगह बिच्छू लगाता है

अन्धेरे और उजाले में ये समझौता ज़रूरी है
निशाना मैं लगाता हूँ ठिकाने तू लगाता है

एक दो आसमान और सही
और थोड़ी उड़ान और सही

शहर आबाद हों दरिन्दों से
जंगलों में मचान और सही

धूप को नींद आ भी सकती है
छाँव की दास्तान और सही

बारिशों हौंसले बुलन्द रहें
मेरा कच्चा मकान और सही

ये पसीना तो अपनी पूंजी है
चन्द मुट्ठी लगान और सही

गालियों से नवाज़ता है मुझे
एक अहले-ज़ुबान और सही

शहर में अमन है कई दिन से
कोई ताज़ा बयान और सही

44

आँख में पानी रखो होटों पे चिंगारी रखो
जिन्दा रहना है तो तरकीबें बहुत सारी रखो

राह के पत्थर से बढ़ कर कुछ नहीं हैं मंज़िलें
रास्ते आवाज़ देते हैं सफ़र जारी रखो

एक ही नदी के हैं ये दो किनारे दोस्तो
दोस्ताना ज़िन्दगी से मौत से यारी रखो

आते-जाते पल ये कहते हैं हमारे कान में
कूच का एलान होने को है तैयारी रखो

ये ज़रूरी है कि आँखों का भरम क़ायम रहे
नींद रखो या न रखो ख़्वाब मेयारी[1] रखो

ये हवाएँ उड़ न जाएँ ले के काग़ज़ का बदन
दोस्तों मुझ पर कोई पत्थर ज़रा भारी रखो

ले तो आए शायरी बाज़ार में राहत मियाँ
क्या ज़रूरी है के लहजे को भी बाज़ारी रखो

---

1. गुणवत्तापूर्ण

45

चराग़ों को उछाला जा रहा है
हवा पे रोब डाला जा रहा है

न हार अपनी न अपनी जीत होगी
मगर सिक्का उछाला जा रहा है

वो देखो मैक़दे के रास्ते में
कोई अल्लाह वाला जा रहा है

थे पहले ही कई साँप आस्तीं में
अब एक बिच्छू भी पाला जा रहा है

मेरे झूठे गिलासों की चखा कर
बहकतों को सँभाला जा रहा है

हमीं बुनियाद का पत्थर हैं लेकिन
हमें घर से निकाला जा रहा है

जनाज़े पर मेरे लिख देना यारों
मुहब्बत करने वाला जा रहा है

46

इससे पहले के हवा शोर मचाने लग जाए
मेरे अल्लाह मेरी ख़ाक ठिकाने लग जाए

घेरे रहते है कई ख़्वाब मेरी आँखों को
काश कुछ देर मुझे नींद भी आने लग जाए

तो ज़रूरी है कि मैं मिस्र से हिजरत कर जाऊँ
जब ज़ुलेखा ही मेरे दाम घटाने लग जाए

साल भर ईद का रस्ता नहीं देखा जाता
वह गले मुझसे किसी और बहाने लग जाए

मेरी कोशिश है कि हर शाम ये ढलता सूरज
शब की दहलीज़ पे एक शमा जलाने लग जाए

47

ख़ुश्क दरियाओं में हल्की सी रवानी और है
रेत के नीचे अभी थोड़ा सा पानी और है

जो भी मिलता है उसे अपना समझ लेता हूँ मैं
एक बीमारी मुझे ये ख़ानदानी और है

बोरिये पे बैठिये कुल्हड़ में पानी पीजिये
हम क़लन्दर हैं हमारी मेज़बानी और है

एक कहानी ख़त्म करके वह बहुत है मुतमईन
भूल बैठा है कि आगे एक कहानी और है

कौन फिर पूछेगा गूंगे मुनसिफ़ों[1] से ख़ैरियत
एक ले-दे के हमारी बेज़बानी और है

एक दिन इस शहर की कीमत लगाई जाएगी
गाँव में थोड़ी बहुत खेती-किसानी और है

---

1. न्यायाधीश

48

न हमसफ़र न किसी हमनशीं से निकलेगा
हमारे पाँव का काँटा हमीं से निकलेगा

इसी जगह पे वो भूका फ़क़ीर रहता था
तलाश कीजै खज़ाना यहीं से निकलेगा

मैं जानता था कि ज़हरीला साँप बनबन कर
तेरा ख़ुलूस मेरी आस्तीं से निकलेगा

बुज़ुर्ग कहते थे इक रोज़ आयेगा एक दिन
जहाँ पे डूबेगा सूरज वहीं से निकलेगा

गुज़िश्ता साल के ज़ख़्मों हरे भरे रहना
जुलूस अबके बरस भी यहीं से निकलेगा

ये राज़ जानना चाहो तो मीर को पढ़ लो
फिर एक ‘हाँ’ का इशारा ‘नहीं’ से निकलेगा

मुझ पर नहीं उठे थे तो उठकर कहाँ गये
मैं शहर में नहीं था, तो पत्थर कहाँ गये

कितने ही लोग प्यास की शिद्दत से मर चुके
मैं सोचता रहा, कि समन्दर कहाँ गये

मैं ख़ुद ही मेज़बान हूँ मेहमान भी हूँ ख़ुद
सब लोग मुझको घर पे बुलाकर कहाँ गये

सैय्याद ने रिहाइ तो दे दी मुझे मगर
मुझको ख़बर नहीं कि मेरे पर कहाँ गये

पिछले दिनों की आँधी में गुम्बद तो गिर चुका
“अल्लाह जाने सारे कबूतर कहाँ गये”

50

सिसकती रुत को महकता गुलाब कर दूँगा
मैं इस बहार में सबका हिसाब कर दूँगा

मैं इन्तज़ार में हूँ तू कोई सवाल तो कर
यक़ीन रख मैं तुझे लाजवाब कर दूँगा

हज़ार पर्दों में ख़ुद को छुपा के बैठ मगर
तुझे कभी न कभी बेनक़ाब कर दूँगा

मुझे भरोसा है अपने लहू के क़तरों पर
मैं नेज़े नेज़े को शाख़े गुलाब कर दूँगा

मुझे यक़ीं है कि महफ़िल की रौशनी हूँ मैं
उन्हें ये खौफ़ कि महफ़िल ख़राब कर दूँगा

मुझे गिलास के अन्दर ही क़ैद रख वरना
मैं सारे शहर का पानी शराब कर दूँगा

महाजनों से कहो थोड़ा इन्तिज़ार करें
शराब खाने से आकर हिसाब कर दूँगा

51

यही वो कच्चे मकाँ हैं भिखारियों वाले
यहाँ उतर के चलेंगे सवारियों वाले

कभी मचान से नीचे उतर के बात करो
बहुत पुराने है क़िस्से शिकारियों वाले

मैं जानता हूँ कि मैं सल्तनत का मालिक हूँ
मगर बदन पे हैं कपड़े भिखारियों वाले

ज़मीं पे रेंगते चलने की हमको आदत है
हमारे साथ न आयें सवारियों वाले

अदब कहाँ का कि हर रात देखता हूँ मैं
मुशायरों में तमाशे मदारियों वाले

मेरी बहार मेरे घर के फूलदान में है
खिले हैं फूल हरी-पीली धारियों वाले

52

अपने होने का हम इस तरह पता देते थे
ख़ाक, मुट्ठी में उठाते थे, उड़ा देते थे

बेसमर जान के हम काट चुके हैं जिनको
याद आते हैं, कि बेचारे हवा देते थे

अब से पहले के जो क़ातिल थे, बहुत अच्छे थे
क़त्ल से पहले, वो पानी तो पिला देते थे

उसकी महफ़िल में वही सच था, वो जो कुछ भी कहे
हम भी गूँगों की तरह हाथ उठा देते थे

अब मेरे हाल पे शर्मिन्दा हुए हैं वो बुज़ुर्ग
जो मुझे फूलने फलने की दुआ देते थे

53

मेरे ख़ुलूस की गहराई से नहीं मिलते
ये झूटे लोग हैं सच्चाई से नहीं मिलते

वो सबसे मिलते हुए हमसे मिलने आता है
हम इस तरह किसी हरजाई से नहीं मिलते

पुराने ज़ख़्म हैं काफ़ी शुमार करने को
सो अब किसी भी शनासाई[1] से नहीं मिलते

मुहब्बतों का सबक दे रहे हैं दुनिया को
जो ईद अपने सगे भाई से नहीं मिलते

हैं साथ साथ मगर फ़र्क़ है मिज़ाजों का
मेरे क़दम मेरी परछाई से नहीं मिलते...

---

1. परिचित

54

खानक़ाहों में, हरम में, न शिवालों में मिले
वो फ़रिश्ते जो किताबों के हवालों में मिले

चाँद को हमने कभी ग़ौर से देखा ही नहीं
उससे कहना कि कभी दिन के उजालों में मिले

मुस्कुराहट की सलीबों पे चढ़ा दो आँसू
ज़िन्दगी ऐसी गुज़ारो कि मिसालों में मिले

फिर वही ज़ख़्म उभर आए जो भर आए थे
आज कुछ ख़त मुझे बोसीदा[1] रिसालों[2] में मिले

मेरी ग़ज़लों ने ये एजाज़ दिया है मुझको
मेरे दुश्मन भी मेरे चाहने वालों में मिले

---

1. पुराने
2. किताबें, पत्रिकाएँ

55

मेरे सूरज को ठण्डा कर रहा है
समन्दर धीरे-धीरे मर रहा है

जमीं हैं सोच कर क़दमों की चापें
न जाने कौन पीछा कर रहा है

मैं अकसर बादलों में देखता हूँ
कोई बूढ़ा इबादत कर रहा है

अब उसकी ठोकरों में ताज होंगे
वो सारी उम्र नंगे सर रहा है

मेरे सीने से गुज़री रेल गाड़ी
ज़ुदाई का अजब मंज़र रहा है

बड़ा ताजिर बना फिरता है सूरज
मेरे ख़्वाबों का सौदा कर रहा है

हो फ़ुर्सत तो हमारे दुःख भी बाँटे
ज़रा देखो ख़ुदा क्या कर रहा है

56

कहाँ गुज़ारी है सांसें जवाब माँगेगा
वो जब भी हमसे मिलेगा हिसाब माँगेगा

दिया न छीन मेरे हाथ से कि दिल मेरा
मचल गया तो अभी आफ़ताब माँगेगा

जो हँस रहा है मेरे शेरों पे वही इक दिन
कुतुब फ़रोश[1] से मेरी किताब माँगेगा

शिकस्त खा ही गया मेरा हातिमाना मिज़ाज
किसे ख़बर थी कि वो मुझसे ख़्वाब माँगेगा

शरीफ़ लोग तो मस्जिद में छुप के बैठ गये
वो जानते थे कि राहत शराब माँगेगा

---

1. किताब की दुकान वाला

57

सारी बस्ती क़दमों में है, ये भी इक फ़नकारी है
वर्ना बदन को छोड़ के अपना जो कुछ है सरकारी है

कालिज के सब लड़के चुप हैं काग़ज़ की इक नाव लिये
चारों तरफ़ दरिया की सूरत, फैली हुई बेकारी है

फूलों की ख़ुशबू लूटी है, तितली के पर नोचे हैं
ये रहज़न का काम नहीं है, रहबर की मक्कारी है

इक इक क़तरा तौल के देगा, इक इक पैसा मोल का लेगा
अब साक़ी ग़ज़लों का नहीं है अब साक़ी व्योपारी है

हमने दो सौ साल से घर में तोते पाल के रक्खे हैं
मीर तक़ी के शेर सुनाना कौन बड़ी फ़नकारी है

अब फिरते हैं हम रिश्तों के रंग बिरंगे ज़ख़्म लिये
सब से हँसकर मिलना जुलना बहुत बड़ी बीमारी है

दौलत-बाज़ू, नकहत-गेसू, शोहरत-माथा, ग़ीबत-होंठ
इस औरत से बच कर रहना यह औरत बाज़ारी है

कश्ती पर आँच आ जाये तो हाथ कलम करवा देना
लाओ मुझे पतवारें दे दो मेरी ज़िम्मेदारी है

58

चाँद इक टूटा हुआ टुकड़ा मेरे जाम का है
ये मेरा क़ौल नहीं, हज़रते ख़य्याम का है

हमसे पूछो कि ग़ज़ल माँगती है कितना लहू
सब समझते हैं ये धन्धा बड़े आराम का है

प्यास अगर मेरी बुझा दे तो मैं जानूँ वर्ना
तू समन्दर है तो होगा मेरे किस काम का है

अब तेरी बारी है, आईने बचाले अपने
मेरे हाथों में जो पत्थर है तेरे नाम का है

तेरी जलती हुई शम्ओं की लवें क्या देखूँ
मेरी आँखों में तो मंज़र अभी आसाम का है

59

पुराने लोगों के क़िस्से निकालता क्यूँ है
भलाई करके, समन्दर में डालता क्यूँ है

ये उससे कह दो कि काग़ज़ के पर भी काफ़ी हैं
वो रोज़ मुझको हवा में उछालता क्यूँ है

कहीं मिलेगा तो इक बात उससे पूछुँगा
वो मार डालेगा मुझको तो पालता क्यूँ है

सफ़ेद दूध, सियाह ज़हर हो, कि सुर्ख़ शराब
मैं पी चुका हूँ तो साग़र खँगालता क्यूँ है

यहाँ तो चारों तरफ़ कोयले की ख़ानें हैं
बचा न पायेगा कपड़े सँभालता क्यूँ है

मेरी ग़ज़ल को ग़ज़ल ही समझ तो अच्छा है
मेरी ग़ज़ल से कोई रुख़ निकालता क्यूँ है

यूँ लम्हा लम्हा सहारों का क़र्ज़दार न कर
गिराना है तो गिरा दे सँभालता क्यूँ है

60

सफ़र की हद है वहाँ तक के कुछ निशान रहे
चले चलो कि जहाँ तक ये आसमान रहे

ये क्या कि, आगे बढ़े और आ गई मंज़िल
मज़ा तो जब है के पैरों में कुछ थकान रहे

मुझे ज़मीन की गहराइयों ने दाब लिया
मैं चाहता था मेरे सर पे आसमान रहे

अब अपने बीच मरासिम[1] नहीं, अदावत[2] है
मगर ये बात हमारे ही दरमियान रहे

वो इक सवाल है, फिर उसका सामना होगा
दुआ करो कि सलामत मेरी ज़बान रहे

---

1. रिश्ते
2. दुश्मनी

61

इसको सामाने सफ़र जान ये जुगनू रख ले
राह में तीरगी होगी, मेरे आँसू रख ले

तू जो चाहे तो तेरा झूठ भी बिक सकता है
शर्त इतनी है कि सोने का तराज़ू रख ले

वक़्त किस तरह गुज़रता है ये अन्दाज़ा लगा
अपनी मुठ्ठी में ज़रा देर को बालू रख ले

वो कोई जिस्म नहीं है कि उसे छू भी सके
हाँ, अगर नाम ही रखना है, तो ख़ुशबू रख ले

मेरी ख़्वाहिश है कि, आँगन में न दीवार उठे
मेरे भाई मेरे हिस्से की ज़मीं तू रख ले

62

ग़ज़ल की क़ब्र पे आँसू बहा के लौट आया
मुशायरों में लतीफ़े सुना के लौट आया

जिहालतों[1] के अँधेरे मिटा के लौट आया
मैं आज सारी किताबें जला के लौट आया

सफ़र में जितना मज़ा है, वो मंज़िलों पे कहाँ
मैं इस दफ़ा तो बहुत दूर जाके लौट आया

ये सोच कर कि वो तन्हाई साथ लायेगा
मैं छत पे बैठे परिन्दे उड़ा के लौट आया

वो अब भी रेल में बैठी सिसक रही होगी
मैं अपना हाथ हवा में हिला के लौट आया

ख़बर मिली है कि सोना निकल रहा है वहाँ
मैं जिस ज़मीन पे ठोकर लगा के लौट आया

वो चाहता था कि कासा[2] ख़रीद ले मेरा
मैं उसके ताज की क़ीमत लगा के लौट आया

1.अज्ञान

2.भिक्षा पात्र

63

शहरों शहरों गाँव का आँगन याद आया
झूठे दोस्त, और सच्चा दुश्मन याद आया

पीली पीली फ़सलें देख के खेतों में
अपने घर का खाली बर्तन याद आया

गिरजा में इक मोम की मरियम रक्खी थी
माँ की गोद में गुज़रा बचपन याद आया

देख के रंग महलों की रंगीं दीवारें
मुझको अपना सूना आँगन याद आया

जंगल सर पर रख के सारा दिन भटके
रात हुई तो राज-सिंहासन याद आया

64

चाँद के माथे पे सूरज का नज़ारा पढ़ लिया
मीर को हमने सवेरे तक दुबारा पढ़ लिया

अपनी काग़ज़ की हवेली भीगने से बच गयी
अक़्लमंदी की, के मौसम का इशारा पढ़ लिया

मौजें लिखती जा रही थीं बादबानों पर नसीब
मैंने घबराहट में तूफ़ाँ को किनारा पढ़ लिया

सो रही थी उजली पोशाकों में काली आत्मा
कम समझ लोगों ने ज़र्रों को सितारा पढ़ लिया

मज़हबी लोगों में उठना बैठना आसाँ नहीं
एहतियातन हमने भी पहला सिपारा पढ़ लिया

65

मेरी तक़दीर में है, मेरे हवाले होंगे
वक़्त के हाथ में गर ज़हर के प्याले होंगे

मस्ज़िदें होंगी, कलीसा, न शिवाले होंगे
इतने नज़दीक तेरे चाहने वाले होंगे

मैं अगर वक़्त का सुक़रात भी बन जाऊँ तो क्या
मेरे हिस्से में वही ज़हर के प्याले होंगे

जिन चराग़ों से तआस्सुब[1] का धुआँ उठता है
उन चराग़ों को बुझा दो तो उजाले होंगे

राहबर मैंने समझ रक्खा था जिनको राहत
क्या ख़बर थी कि वही लूटने वाले होंगे

---

1. सांप्रदायिकता

66

मेरे अश्कों ने कई आँखों को जल थल कर दिया
एक पागल ने कई लोगों को पागल कर दिया

अपनी पलकों पर सजाकर मेरे आँसू आपने
रास्ते की धूल को आँखों का काजल कर दिया

मैंने दिल देकर उसे की थी वफ़ा की इब्तिदा
उसने धोका दे के ये क़िस्सा मुकम्मल कर दिया

ये हवाएँ कब निगाहें फेर लें किसको ख़बर
शोहरतों का तख़्त जब टूटा तो पैदल कर दिया

देवताओं और ख़ुदाओं की लगाई आग ने
देखते ही देखते बस्ती को जंगल कर दिया

शहर में चर्चा है आख़िर ऐसी लड़की कौन है
जिसने अच्छे ख़ासे इक शाईर को पागल कर दिया

ज़ब्त ने यूँ तो बहुत से पुल बनाये थे मगर
अब की बारिश ने तो, सब कमरों को जल थल कर दिया

67

वो एक तीर है, जिसका शिकार मैं भी हूँ
मैं एक हर्फ़ सही, दिल के पार मैं भी हूँ

वो सामने रहा दरिया का दूसरा साहिल
अगर जहाज़ न डूबा तो पार मैं भी हूँ

यहाँ तो मौत का सैलाब आता रहता है
बहुत बचा था, मगर अबकी बार मैं भी हूँ

न जाने किस के मुक़द्दर में वो लिखा होगा
मगर ये सच है कि उम्मीदवार मैं भी हूँ

किसे ख़बर है कि नीले समन्दरों की तरह
बहुत दिनों से बहुत बेक़रार मैं भी हूँ

68

रिश्तों की धूप छाँव से आज़ाद हो गये
अब तो हमें भी सारे सबक़ याद हो गये

आबादियों में होते हैं बर्बाद कितने लोग
हम देखने गये थे तो बर्बाद हो गये

मैं परबतों से लड़ता रहा और चन्द लोग
गीली ज़मीन खोद के फ़रहाद हो गये

बैठे हुए हैं क़ीमती सोफों पे भेड़िये
जंगल के लोग शहर में आबाद हो गये

लफ़्ज़ों के हेर फेर का धन्धा भी ख़ूब है
जाहिल हमारे शहर के उस्ताद हो गये

69

आँख में जितने भी आँसू थे ठिकाने लग गये
आते आते इक तबस्सुम तक ज़माने लग गये

अब तो सेहरा और समन्दर के लिये हैं बारिशें
खेतियाँ जितनी थीं उन पर कारख़ाने लग गये

आपसे इक बात कहनी है, बस इतनी बात थी
मुझको इतनी बात कहने में ज़माने लग गये

तेरी पलकों के घने सायों का मौसम ख़ूब है
धूप में निकला तो सर पर शामियाने लग गये

बन्द कमरों की उमस अपना मुक़द्दर बन गई
छत पे पहुँचा था कि बादल सर उठाने लग गये

70

आँसू-आँसू साज़िश होती रहती है
हर मौसम में बारिश होती रहती है

हम लोगों से झुक कर मिलते रहते हैं
क़ामत[1] की पैमाइश[2] होती रहती है

काई जमी रहती है रूहों पर लेकिन
जिस्मों की आराइश[3] होती रहती है

उजले गुम्बद काले फ़ीते बाँधे हैं
जाने क्या-क्या साज़िश होती रहती है

आती जाती चिड़ियाँ रोशनदानों में
घर आँगन की ख़्वाहिश होती रहती है

घर के बाहर सूरज आग उगलता है
घर के अन्दर बारिश होती रहती है

मुझसे दिल का हाल कोई कब पूछता है
ग़ज़लों की फ़रमाइश होती रहती है

---

1. ऊँचाई
2. माप
3. सजावट

71

झूठी बुलन्दियों का धुआँ पार करके आ
क़द नाँपना है मेरा तो छत से उतर के आ

इस पार मुन्तज़िर हैं तेरी ख़ुश नसीबियाँ
लेकिन ये शर्त है के नदी पार करके आ

कुछ दूर मैं भी दोश ए हवा[1] पर सफ़र करूँ
कुछ दूर तू भी ख़ाक की सूरत बिखर के आ

मैं धूल में अटा हूँ, मगर तुझको क्या हुआ
आईना देख, जा ज़रा घर जा सँवर के आ

सोने का रथ फ़क़ीर के घर तक न आयेगा
कुछ माँगना है हमसे तो पैदल उतर के आ

---

1. हवा के साथ

72

सारी फ़ितरत तो नक़ाबों में छिपा रक्खी थी
सिर्फ़ तस्वीर उजालों में लगा रक्खी थी

हम दिया रख के चले आए हैं देखें क्या हो
उस दरीचे पे तो पहले से हवा रक्खी थी

ज़िन्दगी तेरी क़सम खाके जिन्हें पीते रहे
उन चमकदार गिलासों में क़ज़ा रक्खी थी

मेरी गरदन पे थी तलवार मेरे दुश्मन की
मेरे बाज़ू पे मेरी माँ की दुआ रक्खी थी

शहर में रात मेरा ताज़ियती[1] जलसा था
सब नमाज़ी थे मगर सबने लगा रक्खी थी

---

1. शोक सभा

फूल जैसे मख़मली तलवों में छाले कर दिये
गोरे सूरज ने हज़ारों जिस्म काले कर दिये

प्यास अब कैसे बुझेगी हमने ख़ुद ही भूल से
मयक़दे कमजर्फ़ लोगों के हवाले कर दिये

देखकर तुझको कोई मंज़र न देखा उम्र भर
इक उजाले ने मेरी आँखों में जाले कर दिये

रौशनी के देवता को पूजता था कल तलक
आज घर की खिड़कियों के काँच काले कर दिये

ज़िन्दगी का कोई भी तोहफ़ा नहीं है मेरे पास
खून के आँसू तो ग़ज़लों के हवाले कर दिये

74

कोई मौसम हो, दुख सुख में गुज़ारा कौन करता है
परिन्दों की तरह, सब कुछ गँवारा कौन करता है

वज़ीरों से सिफ़ारिश की तमन्ना हम नहीं करते
हमें मालूम है ज़र्रे को तारा कौन करता है

ये मुझ तक आते आते हादसे क्यों लौट जाते हैं
मेरे बारे में ये, सोचा विचारा कौन करता है

घरों की राख फिर देखेंगे पहले देखना ये है
घरों को फूँक देने का इशारा कौन करता है

जिसे दुनिया कहा जाता है कोठे की तवाइफ़ है
इशारा किसको करती है नज़ारा कौन करता है

75

वही दुख सुख, उसी मंज़र की तरह लगता है
मयक़दे में भी मुझे घर की तरह लगता है

तू कहाँ गुम है तेरे रेशमी आँचल की क़सम
आँसू अब आँख में कंकर की तरह लगता है

याद हैं तुझसे बिछड़ने की वो ठन्डी रातें
अब तो हर रुत में दिसम्बर की तरह लगता है

कभी दिल बनके जो सीने से लगा करता था
अब वही पीठ में ख़ंजर की तरह लगता है

नेज़ा बरदार[1], ज़रा देख मेरे काँधे पर
जाने क्या है जो मुझे सर की तरह लगता है

रात की गोद में ये सहमा हुआ आधा चाँद
मेरे टूटे हुये साग़र की तरह लगता है

जिसने कुछ देखा न हो गाँव के पनघट के सिवा
उसको दरिया भी समन्दर की तरह लगता है

---

1. हथियारबंद

76

ख़ुशी से दूर ग़मों से क़रीब लगते हैं
तुम्हारे शहर के इन्साँ अजीब लगते हैं

इक इन्क़लाब ने, सब सूरतें बदल डालीं
हमें तो अपने ही चेहरे अजीब लगते हैं

सितारे, जिन से मेरा फ़ासला है सदियों का
कभी कभी तो बहुत ही क़रीब लगते हैं

वो इक इशारे पे दुनिया ख़रीद सकते हैं
जो सूरतों से बहुत ही ग़रीब लगते हैं

पयम्बरों का नगर है, कि क़ातिलों का नगर
यहाँ दरख़्त भी मुझको सलीब लगते हैं

77

समन्दर पार होती जा रही है
दुआ, पतवार होती जा रही है

दरीचे अब खुले मिलने लगे हैं
फ़ज़ा हमवार होती जा रही है

कोई गुम्बद है, दरवाज़े के पीछे
सदा बेकार होती जा रही है

मसाइल, जंग, ख़ुशबू, रंग, मौसम
ग़ज़ल अख़बार होती जा रही है

बहुत काँटों भरी दुनिया है लेकिन
गले का हार होती जा रही है

कई दिन से मेरे अन्दर की मस्जिद
ख़ुदा-बेज़ार होती जा रही है

गले कुछ दोस्त आकर मिल रहे हैं
छुरी पर धार होती जा रही है

कटी जाती हैं साँसों की पतंगें
हवा तलवार होती जा रही है

78

इस दुनिया ने मेरी वफ़ा का कितना ऊँचा मोल दिया
बातों के तेज़ाब में, मेरे मन का अमृत घोल दिया

जब भी कोई इनआम मिला है, मेरा नाम भी भूल गये
जब भी कोई इल्ज़ाम लगा है, मुझ पे लाकर ढोल दिया

हाथ के छाले, पाँव के काँटे, आँख में आँसू, दिल का दर्द
तूने मुझको प्यार में जो भी तोहफ़ा दिया अनमोल दिया

अब ग़म आयें, खुशियाँ आयें, मौत आये या तू आये
मैने तो बस आहट पाई और दरवाज़ा खोल दिया

जितना ख़ुशी से रिश्ता मेरा उतना ग़म से नाता है
मैने इक मीज़ान में अपना सारा दुख सुख तोल दिया

ग़म से आकर गले ख़ुशी भी लगे
ज़िन्दगी है तो ज़िन्दगी भी लगे

तू जो आये तो ख़ुद भी खो जाऊँ
तू न हो तो तेरी कमी भी लगे

उसकी आँखों को याद कर लेना
आपको प्यास जब कभी भी लगे

हमने सीखी नहीं है क़िस्मत से
ऐसी उर्दू, जो फ़ारसी भी लगे

वो कभी रूह में उतर आये
और किसी रोज़ अजनबी भी लगे

अश्क पलकों पे हों तो अच्छा है
शामियाने में रोशनी भी लगे

80

तुम्ही कहो, कि ठिकाना मेरा कहाँ है मियाँ
ज़मीं से भाग भी जाऊँ तो आसमां है मियाँ

मैं तुझसे झूठ भी बोलूँ तो छुप नहीं सकता
तमाम शहर यहाँ मेरा राज़दां है मियाँ

मुझे ख़बर नहीं, मन्दिर जले हैं या मस्जिद
मेरी निगाह के आगे तो सब धुआँ है मियाँ

मैं सब को राम समझ लूँ तो ये भी ठीक नहीं
यहाँ हर एक के कांधे पे इक कमाँ है मियाँ

अभी तो कोई तरक्क़ी न कर सके हम लोग
वही किराए का टूटा हुआ मकाँ है मियाँ

81

तीरगी चाँद के ज़ीने से सहर तक पहुँची
ज़ुल्फ़ क़ांधे से जो उतरी तो कमर तक पहुँची

मैंने पूछा था कि ये हाथ में पत्थर क्यूँ है
बात जब आगे बढ़ी तो मेरे सर तक पहुँची

मैं तो सोया था मगर बारहा, तुझसे मिलने
जिस्म से आँख निकलकर तेरे घर तक पहुँची

तुम तो सूरज के पुजारी हो, तुम्हें क्या मालूम
रात किस हाल में कट कट के सहर तक पहुँची

लोग तो सिर्फ़ ख़राबी पे नज़र रखते हैं
मेरे ऐबों की सज़ा मेरे हुनर तक पहुँची

82

अभी तो सिर्फ़ परिन्दे शुमार करना है
ये फिर बतायेंगे किस को शिकार करना है

ये तेरी पीठ है ऐ मेरे बेख़बर दुश्मन
मगर मुझे तेरे सीने पे वार करना है

हम अपने शहर में महफ़ूज भी हैं ख़ुश भी हैं
ये सच नहीं है, मगर एतबार करना है

हमारा शौक़ है दार-ओ-रसन[1] की पैमाईश
तुम्हारा काम कबूतर शिकार करना है

तुझे क़बीले के क़ानून तोड़ने होंगे
मुझे तो सिर्फ़ तेरा इन्तिज़ार करना है

बहुत ग़ुरुर है तुझको ऐ सर फिरे तूफ़ाँ
मुझे भी ज़िद है कि दरिया को पार करना है

---

1. फांसी का फंदा

83

मेरे अपने मुझे मिट्टी में मिलाने आये
तब कहीं जाके मेरे होश ठिकाने आये

तूने बालों में सजा रक्खा था काग़ज़ का गुलाब
मैं ये समझा कि बहारों के ज़माने आये

चाँद ने रात की दहलीज़ को बख़्शे हैं चराग़
मेरे हिस्से में भी अश्कों के ख़ज़ाने आये

दोस्त होकर भी महीनों नहीं मिलता मुझसे
उससे कहना कि कभी ज़ख़्म लगाने आये

फ़ुरसतें चाट रही हैं मेरी हस्ती का लहू
मुंतज़िर[1] हूँ कि, मुझे कोई बुलाने आये

---

1. इंतज़ार में

84

शहर के बिखरे हुऐ मंज़र उठा ले जायेंगे
फूल चुनने वाले आकर सर उठाले जायेंगे

इक नई मस्जिद बनाना चाहते हैं शहर में
तेरे कूचे का कोई पत्थर उठा ले जायेंगे

हम फ़क़ीरों के लिये तो सारी दुनिया एक है
हम जहाँ जायेंगे अपना घर उठा ले जायेंगे

मस्जिदों की सीढ़ियों पर बैठने वाले फ़क़ीर
क्या ख़बर थी एक दिन मिम्बर[1] उठा ले जायेंगे

रंग महलों के दरीचे खोलिये आलम पनाह
वर्ना शहज़ादी को जादूगर उठा ले जायेंगे

---

1. मंच, मस्जिदों में रखी जाने वाली 2 या 3 पायदान की सीढ़ीनुमा चीज़ जिस पर बैठकर संबोधित किया जाता है

85

हर एक चेहरे को ज़ख़्मों का आइना न कहो
ये ज़िन्दगी तो है रहमत इसे सज़ा न कहो

न जाने कौन सी मजबूरियों का क़ैदी हो
वो साथ छोड़ गया है तो बेवफ़ा न कहो

ये और बात कि दुश्मन हुआ है आज मगर
वो मेरा दोस्त था कल तक, उसे बुरा न कहो

ये शहर वो है जहाँ राक्षस भी रहते हैं
हर इक तराशे हुए बुत को देवता न कहो

हमारे ऐब हमें उँगलियों पे गिनवाओ
हमारी पीठ के पीछे हमें बुरा न कहो

86

सुलगते सारे छप्पर लग रहे हैं
कवेलू मक़बरों पर लग रहे हैं

बबूल आँगन में बोया जा रहा है
पहाड़ों पर सनोबर लग रहे हैं

ख़ुदा से काम कोई आ पड़ा है
बहुत मस्जिद के चक्कर लग रहे है

यहाँ दरिया पे पाबंदी नहीं है
मगर पहरे लबों पर लग रहे हैं

बहुत रंगीं तबियत हैं परिन्दे
दरख़्तों पर कैलेण्डर लग रहे हैं

वो अन्दर से बहुत प्यासे हैं साहिब
बज़ाहिर जो समन्दर लग रहे हैं

87

जो माल तेरा था कल तक वो अब पराय का है
यही रिवाज मेरे शहर की सराय का है

इसी लिये तो मुसलसल शिकस्त खाते हैं
हमारी फ़ौज में सेनापति किराय का है

जो दोस्तों की तरह मिलता है अन्धेरे में
वही उजाला तो दुश्मन हमारे साये का है

दिखाई देता है जो भेड़िये के होंठों पर
वो लाल दूध हमारी सफ़ेद गाय का है

शरीफ़ लोग भी राहत से मिलने जुलने लगे
वो अब शराब का आशिक़ नहीं है चाय का है

88

सफ़र सफ़र तेरी यादों का नूर जायेगा
हमारे साथ में सूरज ज़रूर जायेगा

बिखर चुका हूँ मैं इमली की पत्तियों की तरह
अब और लेके कहाँ तक ग़ुरूर जायेगा

मेरी दुआओं, ज़रा साथ साथ ही रहना
वो इस सफ़र में बहुत दूर दूर जायेगा

दिलों का मैल ही सबसे बड़ी सदाक़त है
न जाने कब ये दिमाग़ी फ़ितूर जायेगा

ये मशविरा है कि बैसाखियाँ उधार न ले
उड़नचियों से कोई कितनी दूर जायेगा

89

चाँद मेहमाँ मेरे मकान में था
मैं ख़ुदा जाने किस जहान में था

इक कली मुस्करा के फूल हुई
ये क़सीदा भी तेरी शान में था

दिल्ली वालों को क्यों सुना आये
शेर तो लखनवी ज़बान में था

धूप की इक किरण भी सह न सका
वो परिन्दा जो आसमान में था

हू-ब-हू तुमसे मिलता जुलता हुआ
एक चेहरा हमारे ध्यान में था

90

रात की धड़कन जब तक जारी रहती है
सोते नहीं हम ज़िम्मेदारी रहती है

जब से तूने हल्की-हल्की बातें कीं
यार तबीयत भारी-भारी रहती है

पाँव कमर तक धँस जाते है धरती में
हाथ पसारे जब खुद्दारी रहती है

वह मंज़िल पर अक्सर देर से पहुँचे हैं
जिन लोगों के पास सवारी रहती है

छत से उसकी धूप के नेज़े आते हैं
जिस आँगन में छाँव हमारी रहती है

घर के बाहर ढूँडता रहता हूँ दुनिया
घर के अन्दर दुनियादारी रहती है

91

बरछी ले कर चाँद निकलने वाला है
घर चलिए अब सूरज ढलने वाला है

मंज़रनामा वही पुराना है लेकिन
नाटक का उनवान[1] बदलने वाला है

तौर तरीक़े बदले नरम उजालों ने
हर जुगनू अब आग उगलने वाला है

धूप के डर से कब तक घर में बैठोगे
सूरज तो हर रोज़ निकलने वाला है

एक पुराने खेल खिलौने जैसी है
दुनिया से अब कौन बहलने वाला है

दहशत का माहौल है सारी बस्ती में
क्या कोई अख़बार निकलने वाला है

बे सिमती का मारा मेरा नन्हापन
भीड़ के पीछे-पीछे चलने वाला है

सब को दु:ख से मुक्ती मिलने वाली है
बोतल से इक देव निकलने वाला है

महँगी कालीनें लेकर क्या किजैगा
अपना घर भी एक दिन जलने वाला है

सारी सड़कें मातम करती रहती हैं
हर बच्चा रस्सी पर चलने वाला है

1. शीर्षक

92

सबब वह पूछ रहे हैं उदास होने का
मेरा मिज़ाज नहीं बेलिबास होने का

नया बहाना है हर पल उदास होने का
ये फ़ायदा है तेरे घर के पास होने का

महकती रात के लम्हों, नज़र रखो मुझ पर
बहाना ढूँड रहा हूँ उदास होने का

मैं तेरे पास बता किस गरज़ से आया हूँ
सुबूत दे मुझे चेहरा शनास होने का

मेरी ग़ज़ल से बना ज़ेहन में कोई तस्वीर
सबब न पूछ मेरे देवदास होने का

कहाँ हो आओ मेरी भूली बिसरी यादों आओ
ख़ुश आमदीद, है मौसम उदास होने का

कई दिनों से तबीयत मेरी उदास न थी
यही जवाज़ बहुत है उदास होने का

मैं एहमीयत भी समझता हूँ कहकहों की मगर
मज़ा कुछ अपना अलग है उदास होने का

मेरे लबों से तबस्सुम मज़ाक करने लगा
मैं लिख रहा था क़सीदा उदास होने का

पता नहीं ये परिन्दे कहाँ से आ पहुँचे
अभी ज़माना कहाँ था उदास होने का

मैं कह रहा हूँ कि ऐ दिल इधर-उधर न भटक
गुज़र न जाए ज़माना उदास होने का

93

दुआओं में वह तुम्हें याद करने वाला है
कोई फ़क़ीर की इमदाद करने वाला है

ये सोच-सोच के शर्मिन्दगी सी होती है
वह हुक्म देगा जो फ़रियाद करने वाला है

ज़मीन हम भी तेरे वारिसों में हैं के नहीं
वह इस सवाल को बुनियाद करने वाला है

यही ज़मीन मुझे गोद लेने वाली है
ये आसमां मेरी इमदाद करने वाला है

ये वक्त तू जिसे बर्बाद करता रहता है
ये वक्त ही तुझे बर्बाद करने वाला है

ख़ुदा दराज़ करे उम्र मेरे दुश्मन की
कोई तो है जो मुझे याद करने वाला है

94

मुर्ग़ माही कबाब ज़िन्दाबाद
हर सनद हर खिताब ज़िन्दाबाद

मेरी बस्ती में एक दो अन्धे
पढ़ चुके हर किताब ज़िन्दाबाद

यार अपना है क्या रहें न रहें
शहर की आब ओ ताब ज़िन्दाबाद

सीख लेते हैं गूंगे बहरे भी
नारा-ए-इन्क़लाब ज़िन्दाबाद

रुई की तितलियाँ सलामत बाश
कागज़ों के गुलाब ज़िन्दाबाद

लाख पर्दों में रहने वाले तुम
आज कल बेनक़ाब ज़िन्दाबाद

फिर पुरानी लतें पुराने शौक
फिर पुरानी शराब ज़िन्दाबाद

दिन नमाज़ें, नसीहतें, फ़तवे
रात चंग ओ रूबाब ज़िन्दाबाद

रोज़ दो चार छै गुनाह करो
रोज़ कारे-सवाब ज़िन्दाबाद

तूने दुनिया जवान रखी है
ऐ बुज़ुर्ग आफ़ताब ज़िन्दाबाद

95

उसे अब के वफ़ाओं से गुज़र जाने की जल्दी थी
मगर इस बार मुझको अपने घर जाने की जल्दी थी

इरादा था कि मैं कुछ देर तूफाँ का मज़ा लेता
मगर बेचारे दरिया को उतर जाने की जल्दी थी

मैं अपनी मुट्ठियों में क़ैद कर लेता ज़मीनों को
मगर मेरे कबीले को बिखर जाने की जल्दी थी

मैं आखिर कौन सा मौसम तुम्हारे नाम कर देता
यहाँ हर एक मौसम को गुज़र जाने की जल्दी थी

वह शाखों से जुदा होते हुए पत्तों पे हँसते थे
बड़े ज़िन्दा नज़र थे जिनको मर जाने की जल्दी थी

मैं साबित किस तरह करता के हर आईना झूठा है
कई कमज़र्फ चेहरों को उतर जाने की जल्दी थी

96

चराग़ों का घराना चल रहा है
हवा से दोस्ताना चल रहा है

जवानी की हवाएँ चल रही है
बुज़ुर्गों का खज़ाना चल रहा है

मेरी गुमगुश्तगी पर हंसने वालों
मेरे पीछे ज़माना चल रहा है

अभी हम ज़िन्दगी से मिल न पाये
तआरुफ़ ग़ायबाना चल रहा है

नये किरदार आते जा रहे हैं
मगर नाटक पुराना चल रहा है

वही दुनिया वही साँसें वही हम
वही सब कुछ पुराना चल रहा है

ज़्यादा क्या तवक्को हो ग़ज़ल से
मियाँ, बस आबओदाना चल रहा है

समन्दर से किसी दिन फिर मिलेंगे
अभी पीना पिलाना चल रहा है

वही महशर वही मिलने का वादा
वही बूढ़ा बहाना चल रहा है

यहाँ एक मदरसा होता था पहले
मगर अब कारख़ाना चल रहा है

97

रात बहुत तारीक नहीं है
लेकिन घर नज़दीक नहीं है

फूलों को समझा दे कोई
हँसते रहना ठीक नहीं है

तनकीदें[1] बारीक हैं जितनी
फ़न इतना बारीक नहीं है

कोई ताज़ा शेर हो नाज़िल
हक माँगा है भीख नहीं है

दिन हैं जितने काले-काले
रात इतनी तारीक नहीं है

आज तुम्हारी याद न आई
आज तबीयत ठीक नहीं है

---

1. आलोचना

98

इधर की शय उधर कर दी गई है
ज़मीं ज़ेरो ज़बर कर दी गई है

ये काली रात है दो चार पल की
ये कहने में सहर कर दी गई है

तआरुफ़ को ज़रा फैला दिया है
कहानी मुख़्तसर कर दी गई है

इबादत में बसर करनी थी लेकिन
ख़राबों में बसर कर दी गई है

कई ज़र्रात बाग़ी हो चुके हैं
सितारों को ख़बर कर दी गई है

वह मेरी हमक़दम होने न पाई
जो मेरी हम सफ़र कर दी गई है

99

ऊँचे-ऊँचे दरबारों से क्या लेना
बेचारे हैं बेचारों से क्या लेना

जो मांगेंगे तूफ़ानों से मांगेगे
काग़ज़ की इन पतवारों से क्या लेना

हम ठहरे बंजारे हम बंजारों को
दरवाज़ों और दीवारों से क्या लेना

ख़्वाबों वाली कोई चीज़ नहीं मिलती
सोच रहा हूँ बाज़ारों से क्या लेना

ख़ाली हाथों जीतना है ये जंग हमें
लकड़ी की इन तलवारों से क्या लेना

आग में हम तो बाग़ लगाते हैं हमको
दोज़ख़ तेरे अंगारों से क्या लेना

चारागरी का दावा करते फिरते हैं
बस्ती के इन बीमारों से क्या लेना

साथ हमारे कई सुनहरी सदियाँ हैं
हमें सनीचर इतवारों से क्या लेना

अपना मालिक अपना ख़ालिक अफ़ज़ल है
आती जाती सरकारों से क्या लेना

पाँव पसारो सारी धरती अपनी है
यार इजाज़त मक्कारों से क्या लेना

100

काम सब गैर ज़रूरी है जो सब करते हैं
और हम कुछ नहीं करते हैं ग़ज़ब करते हैं

आप की नज़रों में सूरज की है जितनी अज़मत
हम चिराग़ों का भी उतना ही अदब करते हैं

हम पे हाकिम का कोई हुक्म नहीं चलता है
हम क़लन्दर हैं शहँशाह लक़ब करते हैं

देखिये जिसको उसे धुन है मसीहाई की
आज कल शहर के बीमार मतब करते हैं

ख़ुद को पत्थर सा बना रखा है कुछ लोगों ने
बोल सकते हैं मगर बात ही कब करते हैं

एक एक पल को किताबों की तरह पढ़ने लगे
उम्र भर जो न किया हमने वो अब करते हैं

101

यह आईना फ़साना हो चुका है
तुझे देखे ज़माना हो चुका है

वतन के मौसमों अब लौट आओ
तुम्हें देखे ज़माना हो चुका है

दवाएँ क्या, दुआ क्या, बददुआ क्या
सभी कुछ ताजिराना हो चुका है

अब आँसू भी पुराने हो चुके हैं
समन्दर भी पुराना हो चुका है

चलो दीवाने-ख़ास अब काम आया
परिन्दों का ठिकाना हो चुका है

वही वीरानियाँ हैं शहरे दिल में
यहाँ पहले भी आना हो चुका है

तेरी मसरूफ़ियत हम जानते हैं
मगर मौसम सुहाना हो चुका है

मोहब्बत में ज़रूरी हैं वफ़ाएँ
यह नुस्ख़ा अब पुराना हो चुका है

चलो अब हिज्र का भी हम मज़ा लें
बहुत मिलना मिलाना हो चुका है

हज़ारों सूरतें रौशन हैं दिल में
यह दिल आईना ख़ाना हो चुका है

102

अपने दीवार ओ दर से पूछते हैं
घर के हालात घर से पूछते हैं

क्यों अकेले हैं क़ाफ़िले वाले
एक इक हमसफ़र से पूछते हैं

कितने जंगल हैं इन मकानों में
बस यही शहर भर से पूछते हैं

यह जो दीवार है, यह किसकी है
हम इधर वह उधर से पूछते हैं

हैं कनीज़ें भी इस महल में क्या
शाहज़ादों के डर से पूछते हैं

क्या कहीं क़त्ल हो गया सूरज
रात से रात भर से पूछते हैं

जुर्म है ख़्वाब देखना भी क्या
बस यही चश्मे तर से पूछते हैं

ये मुलाक़ात आख़िरी तो नहीं
हम जुदाई के डर से पूछते हैं

कौन वारिस है छाँव का आख़िर
धूप में हम सफ़र से पूछते हैं

ये किनारे भी कितने सादा हैं
कश्तियों को भँवर से पूछते हैं

वह गुज़रता तो होगा अब तन्हा
एक इक रहगुज़र से पूछते हैं

103

मेरे मरने की ख़बर है उसको
अपनी रुसवाई का डर है उसको

अब वह पहला सा नज़र आता नहीं
ऐसा लगता है नज़र है उसको

मैं किसी से भी मिलूँ कुछ भी करूँ
मेरी नीयत की ख़बर है उसको

भूल जाना उसे आसान नहीं
याद रखना भी हुनर है उसको

रोज़ मरने की दुआ माँगता है
जाने किस बात का डर है उसको

मंज़िलें साथ लिये फिरता है
कितना दुशवार सफ़र है उसको

104

सर पर सात आकाश, ज़मीं पर सात समन्दर बिखरे हैं
आँखे छोटी पड़ जाती हैं इतने मन्ज़र बिखरे हैं

ज़िन्दा रहना खेल नहीं है इस आबाद ख़राबे में
वह भी अक्सर टूट गया है हम भी अक्सर बिखरे हैं

इस बस्ती के लोगों से जब बातें की तो यह जाना
दुनिया भर को जोड़ने वाले अन्दर अन्दर बिखरे हैं

इन रातों से अपना रिश्ता जाने कैसा रिश्ता है
नींदें कमरों में जागीं हैं ख़्वाब छतों पर बिखरे हैं

आँगन के मासूम शजर ने एक कहानी लिखी है
इतने फल शाख़ों पे नहीं थे जितने पत्थर बिखरे हैं

सारी धरती, सारे मौसम, एक ही जैसे लगते हैं
आँखों आँखों क़ैद हुए थे मन्ज़र मन्ज़र बिखरे हैं

105

ये हर सू जो फ़लक-मंज़र खड़े हैं
न जाने किसके पैरों पर खड़े हैं

तुला है धूप बरसाने पे सूरज
शजर भी छतरियाँ लेकर खड़े हैं

इन्हें नामों से मैं पहचानता हूँ
मेरे दुश्मन मेरे अन्दर खड़े हैं

किसी दिन चाँद निकला था यहाँ से
उजाले आज भी छत पर खड़े हैं

जुलूस आने को है दीदावरों का
नज़रें नीची किए मंज़र खड़े हैं

उजाला सा है कुछ कमरे के अन्दर
ज़मीनो-आसमां बाहर खड़े हैं

106

शाम से पहले शाम कर दी है
क्या कहानी तमाम कर दी है

आज सूरज ने मेरे आँगन में
हर किरन बेनियाम[1] कर दी है

जिससे रहता है आसमां नाराज़
वो ज़मीं मेरे नाम कर दी है

दोपहर तक तो साथ चल सूरज
तूने रस्ते में शाम कर दी है

चेहरा-चेहरा हयात लोगों ने
आइनों की ग़ुलाम कर दी है

क्या पढ़ें हम कि कुछ किताबों ने
रौशनी तक हराम कर दी है

---

1. नग्न

107

हवा ख़ुद अबके हवा के ख़िलाफ़ है जानी
दिये जलाओ कि मैदान साफ़ है जानी

हमें चमकती हुई सर्दियों का ख़ौफ़ नहीं
हमारे पास पुराना लिहाफ़ है जानी

वफ़ा का नाम यहाँ हो चुका बहुत बदनाम
मैं बेवफ़ा हूँ मुझे एतराफ़[1] है जानी

है अपने रिश्तों की बुनियाद जिन शरायत पर
वहीं से तेरा मेरा इख़्तिलाफ़ है जानी

वो मेरी पीठ में ख़ंजर उतार सकता है
कि जंग में तो सभी कुछ मुआफ़ है जानी

मैं जाहिलों में भी लहजा बदल नहीं सकता
मेरी असास[2] यही शीन-क़ाफ़ है जानी

---

1. स्वीकार
2. बुनियाद

108

ऊँघती रहगुज़र के बारे में
लोग पूछेंगे घर के बारे में

मील के पत्थरों से पूछता हूँ
अपने एक हमसफ़र के बारे में

मशविरा कर रहे हैं आपस में
चन्द जुगनू सहर के बारे में

एक सच्ची ख़बर सुनाता हूँ
एक झूठी ख़बर के बारे में

उँगलियों से लहू टपकता है
क्या लिखें चारागर के बारे में

लाख मैं गुमशुदा सही लेकिन
जानता हूँ ख़िज़र[1] के बारे में

---

1. रास्ता दिखाने वाले पैग़म्बर

109

धर्म बूढ़े हो गए मज़हब पुराने हो गए
ऐ तमाशागर तेरे करतब पुराने हो गए

आज-कल छुट्टी के दिन भी घर पड़े रहते हैं हम
शाम, साहिल, तुम, समन्दर सब पुराने हो गए

कैसी चाहत, क्या मुरव्वत क्या मुहब्बत क्या ख़ुलूस
इन सभी अल्फ़ाज के मतलब पुराने हो गए

रेंगते रहते हैं हम सदियों से सदियाँ ओढ़कर
हम नए थे ही कहाँ जो अब पुराने हो गए

आस्तीनों में वही खंजर वही हमदर्दियाँ
हैं नए अहबाब लेकिन ढब पुराने हो गए

एक ही मरकज़ पे आँखें ज़ंग-आलूदा हुयीं
चाक पर फिर-फिर के रोज़ो-शब पुराने हो गए

110

खड़े हैं मुझको ख़रीदार देखने के लिए
मैं घर से निकला था बाज़ार देखने के लिए

हज़ारों बार हज़ारों की सिम्त देखते हैं
तरस गए तुझे इक बार देखने के लिए

क़तार में कई नाबीना लोग शामिल हैं
अमीरे-शहर का दरबार देखने के लिए

जगाए रखता हूँ सूरज को अपनी पलकों पर
ज़मीं को ख़्वाब से बे-दार[1] देखने के लिए

अजीब शख़्स है लेता है जुगनुओं से ख़िराज[2]
शबों को अपनी चमकदार देखने के लिए

हर-एक हर्फ़ से चिंगारियाँ निकलती हैं
कलेजा चाहिए अख़बार देखने के लिए

---

1. जाग्रत
2. किराया, महसूल, माल गुज़ारी

111

रास्ता भूल गया क्या इधर आने वाला
अब तो ये सुबह का तारा भी है जाने वाला

याद के फूल को पलकों पे सजा कर रखना
ये मुसाफिर है बहुत दूर से आने वाला

आप उस शख्स से वाकिफ तो हैं कम वाकिफ हैं
वो मसीहा है मगर ज़ख्म लगाने वाला

अजनबी शहर से मायूस ना हो चल तो सही
मिल ही जाएगा कोई ज़ख्म लगाने वाला

जिस्म में सांस थी जब तक वो मुखालिफ ही रहा
मेरा दुश्मन था मगर साथ निभाने वाला

112

तो क्या बारिश भी ज़हरीली हुई है
हमारी फ़स्ल क्यों नीली हुई है

ये किसने बाल खोले मौसमों के
ये रंगत किस लिए पीली हुई है

सफ़र का लुत्फ़ बढ़ता जा रहा है
ज़मीं कुछ और पथरीली हुई है

सुनहरी लग रहा है एक-एक पल
कई बरसों में तब्दीली हुई है

दिखाया है अगर सूरज ने गुस्सा
तो बालू और चमकीली हुई है

113

नफ़रत का बाज़ार न बन
फूल खिला तलवार न बन

रिश्ता-रिश्ता लिख मंज़िल
रस्ता बन दीवार न बन

कुछ लोगों से बैर भी ले
दुनिया भर का यार न बन

अपना दर ही दार लगे
इतना दुनियादार न बन

सब की अपनी साँसें हैं
सबका दावेदार न बन

कौन ख़रीदेगा तुझको
उर्दू का अख़बार न बन

114

ख़ाक होना तय हुआ अब ख़ाकसारी के लिए
ये दुकाँ हमने लगायी थी उधारी के लिए

कुछ पलों की तितलियों के रंग मेरे संग हैं
चंद ख़ुशियाँ हैं ग़मों की पासदारी[1] के लिए

दाँव पर लगने लगीं फिर इज़्ज़तें सादात[2] की
इश्क की राहें बहुत आसाँ है ख़्वारी[3] के लिए

इक समन्दर अपने ही अन्दर डुबोना है मुझे
एक कश्ती चाहिए मुझको सवारी के लिए

धड़कनें पलभर भी दिल से दूर रह सकती नहीं
देवियाँ पागल हुई हैं इक पुजारी के लिए

तजुर्बा अपना 'असद' से कुछ अलग है दोस्तों
मय ज़रूरी शय है यक गूंना-ख़ुमारी[4] के लिए

---

1. आदर करना
2. अच्छा भाग्य
3. शर्म की बात
4. मस्ती

115

दिलों में आग लबों पर गुलाब रखते है
सब अपने चेहरों पे दुहरी नक़ाब रखते हैं

बहुत से लोग कि जो हर्फ़-आशना[1] भी नहीं
इसी में ख़ुश हैं कि तेरी किताब रखते हैं

ये मयक़दा है, वो मस्जिद है, वो है बुतखाना
कहीं भी जाओ फ़रिश्ते हिसाब रखते हैं

हमारे शहर के मंज़र न देख पाएँगे
यहाँ के लोग तो आँखों में ख़्वाब रखते हैं

हमें चिराग समझकर बुझा ना पाओगे
हम अपने घर में कई आफताब रखते हैं...

---

1. शब्द से परिचित

116

चेहरे से धूप आँख से गहराई ले गया
आईना सारे शहर की बीनाई ले गया

डूबे हुए जहाज़ पर क्या तब्सरा[1] करें
ये हादसा तो सोचा कि गहराई ले गया

हालाँकि बेज़बान था लेकिन अजीब था
जो शख़्स मुझसे छीन के गोयाई[2] ले गया

'ग़ालिब' तुम्हारे वास्ते अब कुछ नहीं रहा
गलियों के सारे संग तो सौदाई ले गया

मैं आज अपने घर से निकलने ना पाऊँगा
बस एक कमीज़ थी जो मेरा भाई ले गया

---

1. चर्चा करना
2. बोलने की शक्ति

117

आँख प्यासी है कोई मंज़र दे
इस जज़ीरे को भी समन्दर दे

अपना चेहरा तलाश करना है
गर नहीं आईना तो पत्थर दे

बन्द कलियों को चाहिए शबनम
इन चराग़ों में रौशनी भर दे

पत्थरों के सरों से क़र्ज़ उतार
इस सदी को कोई पयम्बर[1] दे

क़हक़हों में गुज़र रही है हयात
अब किसी दिन उदास भी कर दे

फिर न कहना कि ख़ुदकुशी है गुनाह
आज फ़ुर्सत है फ़ैसला कर दे

---

1. देवदूत

118

काली रातों को भी रंगीन कहा है मैंने
तेरी हर बात पर आमीन कहा है मैंने

तेरी दस्तार पर तन्क़ीद की हिम्मत तो नहीं
अपनी पापोश[1] को कालीन कहा है मैंने

ज़ायक़े बारहा आँखों में मज़ा देते हैं
बाज़ चेहरों को भी नमकीन कहा है मैंने

तूने फ़न की नहीं शिजरे की हिमायत की है
तेरे एजाज़[2] को तौहीन[3] कहा है मैंने

मसलेहत कहिये इसे या के सियासत कहिये
चील कव्वों को भी शाहीन कहा है मैंने

---

1. पायदान
2. सम्मान
3. अपमान

119

साथ मंज़िल थी मगर ख़ौफ़ो- ख़तर ऐसा था
उम्र-भर चलते रहे लोग सफ़र ऐसा था

हिफ़्ज थीं मुझको भी चेहरों की किताबें क्या-क्या
दिल शिकस्ता था मगर तेज़ नज़र ऐसा था

आग ओढ़े था मगर बाँट रहा था साया
धूप के शहर में इक तन्हा शजर ऐसा था

लोग ख़ुद अपने चराग़ों को बुझा कर सोए
शहर में तेज़ हवाओं का असर ऐसा था

जब वो आए तो मैं ख़ुश भी हुआ शर्मिंदा भी
मेरी तक़दीर थी ऐसी मेरा घर ऐसा था

120

अजनबी ख़्वाहिशें सीने में दबा भी न सकूँ
ऐसे ज़िद्दी हैं परिन्दे कि उड़ा भी न सकूँ

फूँक डालूँगा किसी रोज़ मैं दिल की दुनिया
ये तिरा ख़त तो नहीं है कि जला भी न सकूँ

मेरी ग़ैरत भी कोई शय है कि महफ़िल में मुझे
उसने इस तरह बुलाया कि मैं जा भी न सकूँ

इक न इक रोज़ कहीं ढूँढ़ ही लूँगा तुझको
ठोकरें ज़हर नहीं हैं कि मैं खा भी न सकूँ

फल तो सब मेरे दरख्तों के पके हैं लेकिन
इतनी कमजोर हैं शाखें के हिला भी ना सकूँ

121

शह का नौकर न कहे शह का मुसाहिब समझे
उसकी ख़्वाहिश है कि दुनिया उसे ग़ालिब समझे

मेरा क्या मोल है, ये फ़ैसला तुझ पर छोड़ा
मुझको मंज़ूर है तू जो भी मुनासिब समझे

बादशाहों के कसीदों से किताबें भर दीं
कम नज़र लोग थे ज़र्रों को कवाकुब समझे

मैंने जो कुछ भी लिखा, अपने लिए लिक्खा था
ये अलग बात कि वो ख़ुद को मुख़ातिब समझे

हमको दरबार में आने की इजाज़त ही नहीं
हम ना एजाज़ ना ओहदा, ना मरातिब समझे

122

ग़ज़ल फेरी लगाकर बेचता हूँ
मैं सर्राफ़े में पत्थर बेचता हूँ

सियाह मिट्टी की चिड़ियों के बदन पर
गुलाबी पर लगाकर बेचता हूँ

मुझे परवा नहीं सूदो-ज़ियाँ[1] की
मैं क़तरों में समन्दर बेचता हूँ

वो काग़ज़ की मुँडेरें बाँधता है
मैं मिट्टी के कबूतर बेचता हूँ

ख़रीदे हैं मेरे बच्चों ने फ़ाक़े
मैं सड़कों पर मुक़द्दर बेचता हूँ

ख़मोशी है मेरे लफ़्ज़ों की गाहक
बड़े नायाब गौहर बेचता हूँ

---

1. हानि-लाभ

123

हर नयी शय को पुरानी कर दूँ
आग मिल जाए तो पानी कर दूँ

क़ैद आँखों में हैं आँसू वर्ना
हर तरफ़ पानी ही पानी कर दूँ

वज़्अदारी है लहू में वर्ना
मैं अभी ख़त्म कहानी कर दूँ

मैं सुबुक़ लफ़्ज़ो-मआनी का अमीं
संग भी आए तो पानी कर दूँ

आ, क़सीदा कोई लिक्खूँ तेरा
ला, तुझे यूसुफ़े-सानी कर दूँ

124

सुलगती प्यास का कुछ हल ज़ुरूर निकलेगा
हमारे नाम का बादल ज़ुरूर निकलेगा

अदालतें न सही, जंग की ज़मीं पर सही
मैं मसअला हूँ मेरा हल ज़ुरूर निकलेगा

हैं मुर्दाख़ोर परिन्दे छतों पर बैठे हुए
यहीं कहीं कोई मक़्तल ज़ुरूर निकलेगा

हरे-भरे कई शहरों का तजुर्बा है मुझे
कहीं भी जाइए जंगल ज़ुरूर निकलेगा

कोई भी दौर हो लेकर जिहाद की मशअल
मेरी तरह कोई पागल ज़ुरूर निकलेगा...

मैं जब चलूँ तो ये दौलत भी साथ रख देना
मेरे बुज़ुर्ग मेरे सर पर हाथ रख देना

ढलेगा दिन तो सुलगने लगेगा दिल मेरा
मुझे भी घर के चराग़ों के साथ रख देना

ये आने वाले ज़मानों के काम आएँगे
कहीं छिपा के मेरे तजुर्बात रख देना

अँधेरी रात के गुमराह जुगनुओं के लिए
उदास धूप की टहनी पर रात रख देना

मैं एक सच हूँ अगर सुन सको तो सुनते रहो
ग़लत कहूँ तो मेरे मुँह पर हाथ रख देना

126

राह में ख़तरे भी हैं लेकिन ठहरता कौन है
मौत कल आती है आज आ जाए डरता कौन है

सब ही अपनी तेज़गामी[1] के नशे में चूर हैं
लाख आवाज़ें लगा लीजै ठहरता कौन है

हैं परिन्दों के लिए शादाब पेड़ों के हुजूम
अब मेरी टूटी हुई छत पर उतरता कौन है

तेरे लश्कर के मुक़ाबिल मैं अकेला हूँ मगर
फ़ैसला मैदान में होगा कि मरता कौन है

सबने मल रक्खा है चेहरे पर तआस्सुब का गुबार
आईना हम बन भी जाएँ तो सँवरता कौन है

---

1. तीव्रगति से चलना

127

होंठों पर अपने प्यास का दोज़ख़[1] खंगाल ले
या एड़ियाँ रगड़ कोई चश्मा निकाल ले

भाई समझ रहा है तो आ जा गले लगें
दुश्मन समझ रहा है तो हसरत निकाल ले

ऐसे तो ख़त्म हो न सकेगा मुक़ाबला
अब मशविरा यही है कि सिक्का उछाल ले

ये लग़्ज़िशें तो मैंने विरासत में पाई हैं
अब तेरा काम है कि गिरूँ तो सँभाल ले

यारो! मुआफ़ ‘मीर’ का मैं मोतक़िद नहीं
ऐसी भी क्या ग़ज़ल कि कलेजा निकाल ले

---

1. नर्क

128

मेरे अहबाब को जिस वक़्त भी फ़ुर्सत होगी
और तो कुछ नहीं होगा, मेरी ग़ीबत होगी

अभी रंगों की ज़ुबाँ गुंग पड़ी है लेकिन
जब ये तस्वीर बनेगी तो क़यामत होगी

अब के बारिश में नहाने का मज़ा आएगा
बेलिबासी की तरह घर की खुली छत होगी

माँ के क़दमों के निशां हैं कि दिए रौशन हैं
ग़ौर से देख यहीं पर कहीं जन्नत होगी

है तेरे नाम से इस शाम का ये पहला जाम
इंशाअल्लाह इसी जाम में बरकत होगी

उससे मिलना है तो वो शाम ढले मिलता है
धूप में घर से निकलना तो हिमाकत होगी

ये चराग़ अपने ही ताकों पे सजा ले ए दोस्त
रोशनी की तेरे घर में भी ज़रूरत होगी

129

शाम ने जब पलकों पर आतिश-दान लिया
कुछ यादों ने चुटकी में लोबान लिया

दरवाज़ों ने अपनी आँखें नम कर लीं
दीवारों ने अपना सीना तान लिया

प्यास तो अपनी सात समन्दर जैसी थी
नाहक़ हमने बारिश का एहसान लिया

मैंने तलवों से बाँधी थी छाँव मगर
शायद मुझको सूरज ने पहचान लिया

कितने सुख से धरती ओढ़ के सोए हैं
हमने अपनी माँ का कहना मान लिया

130

जो शाखों पर उदासी के बरहना[1] ख़त बनाते हैं
हम उन सूखे हुए पत्तों से घर की छत बनाते हैं

फ़रिश्ते रंग बरसाते हैं, मौसम रक़्स[2] करता है
जब उड़ते बादलों में हम तेरी सूरत बनाते हैं

सुलगती रेत पर दरिया ने जिनका नाम लिक्खा था
हम उन तश्ना-लबों[3] की याद में शरबत बनाते हैं

मैं जिनके बोलते अल्फ़ाज़ को गूँगा समझता हूँ
वो बूढ़े होंठ मेरे वास्ते जन्नत बनाते हैं

न जाने कौन सी तख़लीक़ की मेराज[4] हो जाए
हम अपने घर में अक्सर रुई के परबत बनाते हैं

---

1. नग्न
2. नृत्य
3. प्यासे होठों
4. पराकाष्ठा

131

सिर्फ़ सच और झूठ की मीज़ान में रक्खे रहे
हम बहादुर थे मगर मैदान में रक्खे रहे

जुगनुओं ने फिर अँधेरों से लड़ाई जीत ली
चाँद सूरज घर के रोशनदान में रक्खे रहे

धीरे-धीरे सारी किरनें ख़ुदकुशी करने लगीं
हम सहीफ़ा थे मगर जुज़दान में रक्खे रहे

बन्द कमरे खोल कर सच्चाइयाँ रहने लगीं
ख़्वाब कच्ची धूप थे दालान में रक्खे रहे

सिर्फ़ इतना फ़ासला है ज़िन्दगी से मौत का
शाख़ से तोड़े गए गुलदान में रक्खे रहे

ज़िन्दगी भर अपनी गूंगी धड़कनों के साथ साथ
हम भी घर के क़ीमती सामान में रक्खे रहे

132

मुझे डुबो के बहुत शर्मसार रहती है
वह एक मौज जो दरिया के पार रहती है

हमारे ताक़ भी बेज़ार हैं उजालों से
दिए की लौ भी हवा पर सवार रहती है

फिर उसके बाद वही बासी मन्ज़रों के जुलूस
बहार चन्द ही लम्हे बहार रहती है

इसी से क़र्ज़ चुकाए हैं मैंने सदियों के
यह ज़िन्दगी जो हमेशा उधार रहती है

हमारी, शहर के दानिश्वरों से यारी है
इसीलिए तो क़बा तार तार रहती है

मुझे ख़रीदने वालों! क़तार में आओ
वह चीज़ हूँ जो पसे इश्तेहार रहती है

133

दांव पर मैं भी दांव पर तू भी
बेख़बर मैं भी बेख़बर तू भी

आसमां मुझ से दोस्ती कर ले
दरबदर मैं भी दरबदर तू भी

कुछ दिनों शहर की हवा खा ले
सीख जायेगा सब हुनर तू भी

मैं तेरे साथ तू किसी के साथ
हमसफ़र मैं भी हमसफ़र तू भी

हैं वफाओं के दोनों दावेदार
मैं भी इस पुलसिरात पर, तू भी

ऐ मेरे दोस्त तेरे बारे में
कुछ अलग राय थी मगर, तू भी

134

ज़िन्दगी की हर कहानी बे असर हो जाएगी
हम न होंगे तो यह दुनिया दर ब दर हो जाएगी

पाँव पत्थर करके छोड़ेगी अगर रुक जाइये
चलते रहिए तो ज़मीं भी हमसफ़र हो जाएगी

जुगनुओं को साथ लेकर रात रोशन कीजिए
रास्ता सूरज का देखा तो सहर हो जाएगी

ज़िन्दगी भी काश मेरे साथ रहती उम्र भर
ख़ैर अब जैसे भी होनी है बसर हो जाएगी

तुम ने ख़ुद ही सर चढ़ाई थी सो अब चक्खो मज़ा
मैं न कहता था, कि दुनिया दर्द-ए-सर हो जाएगी

तलख़ियाँ भी लाज़मी हैं ज़िन्दगी के वास्ते
इतना मीठा बन के मत रहिए शकर हो जाएगी

135

चेहरों के लिए आईने क़ुर्बान किए हैं
इस शौक़ में अपने बड़े नुक़सान किए हैं

महफ़िल में मुझे गालियाँ देकर है बहुत ख़ुश
जिस शख़्स पर मैंने कई एहसान किए हैं

ख़्वाबों से निपटना है मुझे रतजगे करके
कमबख़्त कई दिन से परेशान किए हैं

रिश्तों के, मरासिम के, मुहब्बत के, वफ़ा के
कुछ शहर तो ख़ुद हमने ही वीरान किए हैं

तू ख़ुद भी अगर आए तो ख़ुश्बू में नहा जाए
हम घर को तेरे ज़िक्र से लोबान किए हैं

ऐ धड़कनों अब और ठिकाना कोई ढूँढ़ो
हम दिल में तो उस शख़्स को मेहमान किए हैं

चुनिंदा अशआर

~1~

आसमां ओढ़ के सोए हैं खुले मैदां में
अपनी ये छत किसी दीवार की मोहताज नहीं

~2~

ये जाके मील के पत्थर पर कोई लिख आये
वो हम नहीं हैं जिन्हें रास्ता चलाता है

~3~

कभी दिमाग़, कभी दिल, कभी नज़र में रहो
ये सब तुम्हारे ही घर हैं, किसी भी घर में रहो

~4~

लोग हर मोड़ पर रुक रुक के सँभलते क्यूँ हैं
इतना डरते हैं तो फिर घर से निकलते क्यूँ हैं

~5~

उसकी याद आई है, साँसों ज़रा आहिस्ता चलो
धड़कनों से भी इबादत में ख़लल पड़ता है

~6~

उँगलिया यूँ न सब पर उठाया करो
ख़र्च करने से पहले कमाया करो

~7~

चाँद सूरज कहाँ, अपनी मन्ज़िल कहाँ
ऐसे वैसों को मुँह मत लगाया करो

~8~

हम से पहले भी मुसाफ़िर कई गुज़रे होंगे
कम से कम राह के पत्थर तो हटाते जाते

~9~

मुहब्बतों का सबक़ दे रहे हैं दुनिया को
जो ईद अपने सगे भाई से नहीं मिलते

~10~

हमसे पूछो कि ग़ज़ल माँगती है कितना लहू
सब समझते हैं ये धन्धा बड़े आराम का है

~11~

मेरी ख़्वाहिश है कि, आँगन में न दीवार उठे
मेरे भाई मेरे हिस्से की ज़मीं तू रख ले

~12~

मेरी गरदन पर थी तलवार मेरे दुश्मन की
मेरे बाज़ू पर मेरी माँ की दुआ रक्खी थी

~13~

बहुत ग़ुरुर है तुझको ए सरफिरे तूफ़ाँ
मुझे भी ज़िद है कि दरिया को पार करना है

~14~

हम फ़क़ीरों के लिये तो सारी दुनिया एक है
हम जहाँ जायेंगे अपना घर उठा ले जायेंगे

~15~

ये वक़्त तू जिसे बर्बाद करता रहता है
ये वक़्त ही तुझे बर्बाद करने वाला है

~16~

ख़्वाबों वाली कोई चीज़ नहीं मिलती
सोच रहा हूँ बाज़ारों से क्या लेना

~17~

पाँव पसारो सारी धरती अपनी है
यार इजाज़त मक्कारों से क्या लेना

~18~

माँ के क़दमों के निशां हैं कि दिए रौशन हैं
ग़ौर से देख यहीं पर कहीं जन्नत होगी

~19~

राह में ख़तरे भी हैं लेकिन ठहरता कौन है
मौत कल आती है आज आ जाए डरता कौन है

~20~

है ग़लत उस को बेवफ़ा कहना
हम कहाँ के धुले धुलाए थे

~21~

जुगनुओं ने फिर अँधेरों से लड़ाई जीत ली
चाँद सूरज घर के रोशनदान में रक्खे रहे

~22~

धूप बहुत है मौसम जल थल भेजो ना
बाबा मेरे नाम का बादल भेजो ना

~23~

मैं बस्ती में आख़िर किस से बात करूँ
मेरे जैसा कोई पागल भेजो ना

~24~

सवाल घर नहीं बुनियाद पर उठाया है
हमारे पाँव की मिट्टी ने सर उठाया है

~25~

जैसे दरिया किसी दरिया से मिले
आओ! हो जाएँ मुकम्मल हम तुम

~26~

जुगनुओं को साथ लेकर रात रौशन कीजिए

रास्ता सूरज का देखा तो सहर हो जाएगी

~27~

सूरज से जंग जीतने निकले थे बेवक़ूफ़
सारे सिपाही मोम के थे घुल के आ गये

~28~

क़तरा क़तरा शबनम गिन कर क्या होगा
दरियाओं की दावेदारी किया करो

~29~

समन्दरों में मुआफ़िक़ हवा चलाता है
जहाज़ ख़ुद नहीं चलते, ख़ुदा चलाता है

~30~

मुझ पर नहीं उठे थे तो उठकर कहाँ गये
मैं शहर में नहीं था, तो पत्थर कहाँ गये

~31~

ये हादसा तो किसी दिन गुज़रने वाला था
मैं बच भी जाता, तो इक रोज़ मरने वाला था

~32~

मेरा नसीब, मेरे हाथ कट गये वर्ना
मैं तेरी माँग में सिन्दूर भरने वाला था

~33~

ये ज़िन्दगी जो मुझे क़र्ज़दार करती है
कहीं अकेले में मिल जाए तो हिसाब करूँ

~34~

दिया न छीन मेरे हाथ से कि दिल मेरा
मचल गया तो अभी आफ़ताब माँगेगा

~35~

ये क्या कि, आगे बढ़े और आ गई मंज़िल
मज़ा तो जब है के पैरों में कुछ थकान रहे

~36~

जो मांगेंगे तूफ़ानों से मांगेंगे
काग़ज़ की इन पतवारों से क्या लेना

~37~

यह जो दीवार है, यह किस की है
हम इधर वह उधर से पूछते हैं

~38~

अजीब शख़्स है लेता है जुगनुओं से ख़िराज
शबों को अपनी चमकदार देखने के लिए

~39~

सुलगती प्यास का कुछ हल ज़रूर निकलेगा
हमारे नाम का बादल ज़रूर निकलेगा

~40~

कितने सुख से धरती ओढ़ के सोए हैं
हमने अपनी माँ का कहना मान लिया

~41~

अगर ख़्याल भी आए कि तुझ को ख़त लिक्खूँ
तो घोंसलों से कबूतर निकलने लगते हैं

~42~

न जाने कौन सी मजबूरियों का क़ैदी हो
वो साथ छोड़ गया है तो बेवफ़ा न कहो

~43~

बहुत ग़ुरूर है दरिया को अपने होने पर
जो मेरी प्यास से उलझे तो धज्जियाँ उड़ जाएँ

~44~

धूप के डर से कब तक घर में बैठोगे
सूरज तो हर रोज़ निकलने वाला है

~45~

ख़बर मिली है कि सोना निकल रहा है वहाँ
मैं जिस ज़मीन पर ठोकर लगा के लौट आया

~46~

गिरजा में इक मोम की मरियम रक्खी थी
माँ की गोद में गुज़रा बचपन याद आया

~47~

मैं अँधेरों से बचा लाया था अपने आपको
मेरा दु:ख ये है मेरे पीछे उजाले पड़ गये

~48~

ये मुझ तक आते आते हादसे क्यों लौट जाते हैं
मेरे बारे में ये, सोचा विचारा कौन करता है

~49~

बुतों से मुझको इजाज़त अगर कभी मिल जाए
तो शहर भर के ख़ुदाओं को बेनक़ाब करूँ

~50~

वक़्त किस तरह गुज़रता है अंदाज़ा लगा
अपनी मुठ्ठी में ज़रा देर को बालू रख ले

~51~

किसने दस्तक दी ये दिल पर कौन है
आप तो अन्दर हैं, बाहर कौन है

~52~

कैसे साथी कैसे यार सब मक्कार

सबकी नीयत डावाँ डोल अल्लाह बोल

~53~

रोज़ वही एक कोशिश ज़िन्दा रहने की
मरने की भी कुछ तय्यारी किया करो

~54~

पहले दीप जलें तो चर्चे होते थे
और अब शहर जलें तो हैरत नई होती

~55~

पुराने दाँव पर हर दिन नये आँसू लगाता है
वह अब भी एक फटे रूमाल पर ख़ुश्बू लगाता है

~56~

ख़ाली कशकौल पर इतराई हुई फिरती है
ये फक़ीरी किसी दस्तार की मोहताज नहीं

~57~

लाख सूरज से दोस्ताना हो
चन्द जुगनू भी पाल रक्खा करो

~58~

एक पत्थर है वह मेरी राह का
गर न ठुकराऊँ तो ठोकर खाऊँ क्या?

~59~

सर बकफ़ थे तो सरों से हाथ धोना पड़ गया
सर झुकाए थे वह दस्तारों के मालिक हो गये

~60~

तरक़्क़ी कर गये बीमारियों के सौदागर
ये सब मरीज़ हैं जो अब दवाएँ करने लगे

~61~

लगेगी आग तो आएँगे घर कई ज़द में
यहाँ पर सिर्फ़ हमारा मकान थोड़ी है

~62~

सभी का ख़ून है शामिल यहाँ की मिट्टी में
किसी के बाप का हिन्दुस्तान थोड़ी है

~63~

आँख में पानी रखो होठों पे चिंगारी रखो
ज़िन्दा रहना है तो तरकीबें बहुत सारी रखो

~64~

इससे पहले के हवा शोर मचाने लग जाए
मेरे अल्लाह मेरी ख़ाक ठिकाने लग जाए

~65~

इसी जगह पे वो भूका फ़क़ीर रहता था
तलाश कीजै ख़ज़ाना यहीं से निकलेगा

~66~

ये राज़ जानना चाहो तो मीर को पढ़ लो
फिर एक 'हाँ' का इशारा 'नहीं' से निकलेगा

~67~

हों लाख ज़ुल्म मगर बद-दुआ नहीं देंगे
ज़मीन माँ है ज़मीं को दग़ा नहीं देंगे

~68~

दोस्ती जब किसी से की जाये
दुश्मनों की भी राय ली जाये

~69~

मेरा इक पल भी मुझे मिल न सका
मैंने दिन रात गुज़ारे तेरे

~70~

सिर्फ़ दो घूँट प्यास की ख़ातिर
उम्र भर धूप में नहाए थे

~71~

आज काँटो भरा मुक़द्दर है
हम ने गुल भी बहुत खिलाए थे

~72~

महाबली से बग़ावत बहुत ज़रूरी थी
क़दम यह हम ने समझ सोच कर उठाया है

~73~

ज़िन्दगी क्या है ख़ुद ही समझ जाओगे
बारिशों में पतंगें उड़ाया करो

~74~

इसी से कर्ज़ चुकाए हैं मैंने सदियों के
ये ज़िन्दगी जो हमेशा उधार रहती है

~75~

अब तो हर हाथ का पत्थर हमें पहचानता है
उम्र गुज़री है तेरे शहर में आते जाते

~76~

मुझ को रोने का सलीक़ा भी नहीं है शायद
लोग हँसते हैं मुझे देख के आते जाते

~77~

हौसले ज़िन्दगी के देखते हैं
चलिए कुछ रोज़ जी के देखते हैं

~78~

बारिशों से तो प्यास बुझती नहीं

आइए ज़हर पी के देखते हैं

~79~

बैर दुनिया से क़बीले से लड़ाई लेते
एक सच के लिए किस-किस से बुराई लेते

~80~

अपनी साँसें बेच कर मैंने जिसे आबाद की
वो गली जन्नत तो अब भी है मगर शद्दाद[1] की

~81~

इम्तेहाँ लेंगे यहाँ सब्र का दुनिया वाले
मेरी आँखों! कहीं ऐसे में छलक मत जाना

~82~

ज़िन्दा रहना है तो सड़कों पे निकलना होगा
घर के बोसीदा किवाड़ों से चिपक मत जाना

~83~

रिश्ता-रिश्ता साया-ए-दीवारो-दर में क़ैद हूँ
मेरा दुख ये है कि मैं अपने ही घर में क़ैद हूँ

~84~

मेरे पत्थर, मेरा सीना, मेरे नाख़ुन, मेरे ज़ख़्म
मैं कोई सौदा हूँ और अपने ही सर में क़ैद हूँ

~85~

नौजवां बेटों को शहरों के तमाशे ले उड़े
गाँव की झोली में कुछ मजबूर माँएँ रह गयीं

~86~

बादा-ख़ाने[2], शायरी, नग्मे, लतीफ़े, रतजगे[3]
अपने हिस्से में यही देसी दवाएँ रह गयीं

~87~

मैं चाहता था ख़ुद से मुलाक़ात हो मगर
आईने मेरे क़द के बराबर नहीं मिले

~88~

हालाँकि दोस्तों से बहुत कम मिले हैं हम
लेकिन कभी नक़ाब लगाकर नहीं मिले

~89~

मुझे तूने किनारे से है जाना
ज़रा गहरे उतरना चाहिए था

~90~

फ़लक पर तबसिरा करने से पहले
ज़मीं का क़र्ज़ उतरना चाहिए था

~91~

आसमां मुझसे दोस्ती कर ले
दरबदर मैं भी दरबदर तू भी

~92~

मैं तेरे साथ तू किसी के साथ
हमसफ़र मैं भी हमसफ़र तू भी

~93~

ज़िन्दगी किस तरह गुज़ारते हैं
ज़िन्दगी भर न यह कमाल आया

~94~

वह जो दो गज़ ज़मीं थी मेरे नाम
आसमां की तरफ़ उछाल आया

~95~

दुश्मन से तो टक्कर ली है सौ सौ बार
सामना अब के यारों का है मौला ख़ैर

~96~

पाँव पत्थर करके छोड़ेगी अगर रुक जाइये
चलते रहिए तो ज़मीं भी हमसफ़र हो जाएगी

~97~

तू तो अपने मश्विरों के ज़ख़्म दे कर छोड़ दे
मुझको ज़िन्दा किस तरह रहना है मुझ पर छोड़ दे

~98~

अब तो इस शीशे के घर में साँस लेना है मुहाल
कम से कम सर फोड़ने को एक पत्थर छोड़ दे

~99~

जब कभी फूलों ने ख़ुश्बू की तिजारत की है
पत्ती-पत्ती ने हवाओं से शिकायत की है

~100~

यूँ लगा जैसे कोई इत्र फ़ज़ा में घुल जाए
जब किसी बच्चे ने कुरआं की तिलावत की है

~101~

ज़िन्दगी को ज़ख़्म की लज़्ज़त से मत महरूम कर
रास्ते के पत्थरों से ख़ैरियत मालूम कर

~102~

टूट कर बिखरी हुई तलवार के टुकड़े समेट
और अपने हार जाने का सबब मालूम कर

~103~

ये भूल मत कि अभी सर पर आसमान भी है
किसी के सर का दुपट्टा उतारने वाले

~104~

बिठाए फिरते हैं दुनिया को अपनी पलकों पर

मेरी निगाह से दुनिया उतारने वाले

~105~

हाथ अभी पीछे बँधे रहते हैं चुप रहते हैं
देखना ये है तुझे कितने कमाल आते हैं

~106~

किसी ग़रीब दुपट्टे का क़र्ज है उस पर
तुम्हारे पास जो रेशम की शाल है ठाकुर

~107~

साँसों पर लिख रब का नाम सुबह शाम
यही वज़ीफा है अनमोल अल्लाह बोल

~108~

चाँद ज़्यादा रौशन है तो रहने दो
जुगनू भय्या जी मत भारी किया करो

~109~

मैंने ऐ सूरज तुझे पूजा नहीं समझा तो है
मेरे हिस्से में भी थोड़ी धूप आनी चाहिये

~110~

तूफ़ाँ तो इस शहर में अक्सर आता है
देखें अब के किस का नम्बर आता है

~111~

हमने ही कुछ लिखना पढ़ना छोड़ दिया
वर्ना ग़ज़ल की इतनी क़िल्लत नई होती

~112~

रोटी की गोलाई नापा करता है
इसी लिये तो घर में बरकत नई होती

~113~

नींदें क्या-क्या ख़्वाब दिखाकर ग़ायब हैं
आँखें तो मौजूद हैं मंज़र ग़ायब हैं

~114~

ये ख़ाकज़ादे जो रहते हैं बे-ज़बान पड़े
इशारा कर दें तो सूरज ज़मीं पर आन पड़े

~115~

उठे हैं हाथ मेरे हुरमते-ज़मीं के लिए
मज़ा जब आए कि अब पाँव आसमान पड़े

~116~

घर से ये सोच के निकला हूँ कि मर जाना है
अब कोई राह दिखा दे कि किधर जाना है

~117~

जिस्म से साथ निभाने की मत उम्मीद रखो
इस मुसाफ़िर को तो रस्ते में ठहर जाना है

~118~

ख़्वाबों में जो बसी है वो दुनिया हसीन है
लेकिन नसीब में वही दो गज़ ज़मीन है

~119~

सुलगते चीख़ते मौसम की वापसी होगी
नई रुतों में नए ग़म की वापसी होगी

~120~

हमें बहार से दिलचस्पियाँ नहीं लेकिन
ख़ुशी ये है कि तेरे ग़म की वापसी होगी

~121~

सबके दुख-सुख उसके चेहरे पर लिखे पाए गए
आदमी क्या था हमारे शहर का अख़बार था

~122~

लोग होंठों पे सजाए हुए फिरते हैं मुझे
मेरी शोहरत किसी अख़बार की मोहताज नहीं

~123~

मैंने मुल्कों की तरह लोगों के दिल जीते हैं
ये हुकूमत किसी तलवार की मोहताज नहीं

~124~

सब लकीरों पे छोड़ रखा है
आप भी कुछ कमाल रखा करो

~125~

ख़ाली ख़ाली उदास उदास आँखें
इन में कुछ ख़्वाब पाल रक्खा करो

~126~

क़ाग़जों की सब सियाही बारिशों में धुल गयी
हमने जो सोचा तेरे बारे में सब बेकार था

~127~

इन्तज़ामात नए सिर से सँभाले जाएँ
जितने कमज़र्फ़ हैं महफ़िल से निकाले जाएँ

~128~

ख़ाक में यूँ न मिला ज़ब्त की तौहीन न कर
ये वो आँसू हैं जो दुनिया को बहा ले जाएँ

~129~

फूल ही फूल पांव से सर तक
नाम उसका बहार होना था

~130~

ऐ ख़ुदा मेरी ज़िन्दगी पे मुझे

कुछ न कुछ इख़्तियार होना था

~131~

चाँद तेशा है, ज़ख़्म रंगत है
शायरी कुछ नहीं अलामत है

~132~

छोड़िये भी दुखों सुखों का हिसाब
आप मिलते हैं ये ग़नीमत है

~133~

जी चाहता है बस उसे पढ़ते ही जाईये
चेहरा है या वरक़ है ख़ुदा की किताब का

~134~

सूरजमुखी के फूल से शायद पता चले
मुँह जाने किसने चूम लिया आफ़ताब का

~135~

मुझ में कितने राज़ हैं बतलाऊँ क्या?
बन्द एक मुद्दत से हूँ खुल जाऊँ क्या?

~136~

कल यहाँ मैं था जहाँ तुम आज हो
मैं तुम्हारी ही तरह इतराऊँ क्या?

~137~

देखते ही देखते कितनी दुकाने खुल गयीं
बिकने आए थे वह बाज़ारों के मालिक हो गये

~138~

एक ही नदी के हैं ये दो किनारे दोस्तो
दोस्ताना ज़िन्दगी से मौत से यारी रखो

~139~

हमीं बुनियाद का पत्थर हैं लेकिन
हमें घर से निकाला जा रहा है

~140~

थे पहले ही कई साँप आस्तीं में
अब एक बिच्छू भी पाला जा रहा है

~141~

ज़िन्दगी तेरी आस रखती है
ये निबोली मिठास रखती है

~142~

मौत अपने बदन पे कुछ दिन तक
ज़िन्दगी का लिबास रखती है

~143~

साल भर ईद का रस्ता नहीं देखा जाता
वह गले मुझसे किसी और बहाने लग जाए

~144~

बोरिये पे बैठिये कुल्हड़ में पानी पीजिये
हम क़लन्दर हैं हमारी मेज़बानी और है

~145~

न हमसफ़र न किसी हमनशीं से निकलेगा
हमारे पाँव का काँटा हमीं से निकलेगा

~146~

शराब पी के बड़े तजुर्बे हुए हैं हमें
शरीफ़ लोगों को हम मशविरा नहीं देगें

~147~

वो पाँच वक़्त नज़र आता है नमाज़ों में
मगर सुना है कि शब में जुआ चलाता है

~148~

ये लोग पाँव नहीं ज़हन से अपाहिज हैं
उधर चलेंगे जिधर रहनुमा चलाता है

~149~

बोतलें खोलके तो पी बरसों
आज दिल खोल कर भी पी जाये

~150~

दोस्त है तो मेरा कहा भी मान
मुझसे शिकवा भी कर, बुरा भी मान

~151~

हजार परदों में ख़ुद को छुपा के बैठ मगर
तुझे कभी न कभी बेनक़ाब कर दूँगा

~152~

बेसमर जान के हम काट चुके हैं जिनको
याद आते हैं, कि बेचारे हवा देते थे

~153~

अब से पहले के जो क़ातिल थे, बहुत अच्छे थे
क़त्ल से पहले, वो पानी तो पिला देते थे

~154~

मोड़ होता है जवानी का सँभलने के लिये
और सब लोग यहीं आके फिसलते क्यूँ हैं

~155~

नींद से मेरा तआल्लुक ही नहीं बरसों से
ख़्वाब आ आके मेरी छत पे टहलते क्यूँ हैं

~156~

रोज़ तारों को नुमाइश में ख़लल पड़ता है

चाँद पागल है अँधेरे में निकल पड़ता है

~157~

चाँद को हमने कभी ग़ौर से देखा ही नहीं
उससे कहना कि कभी दिन के उजालों में मिले

~158~

मेरी ग़ज़लों ने ये एज़ाज़ दिया है मुझको
मेरे दुश्मन भी मेरे चाहने वालों में मिले

~159~

चेहरों के लिए आईने क़ुर्बान किए हैं
इस शौक़ में अपने बड़े नुक़सान किए हैं

~160~

ऐ धड़कनों अब और ठिकाना कोई ढूँड़ो
हम दिल मे तो उस शख़्स को मेहमान किए हैं

~161~

उस आदमी को बस एक धुन सवार रहती है
बहुत हसीं है ये दुनिया इसे ख़राब करूँ

~162~

ये अलग बात हम भटक जाएँ
वैसे दुनिया बहुत बड़ी तो नहीं

~163~

आते-आते ही आएगी मंज़िल
रास्ते में कहीं पड़ी तो नहीं

~164~

अपने रस्ते बनाए ख़ुद मैंने
मेरे रस्ते से हट गई दुनिया

~165~

जब भी दुनिया को छोड़ना चाहा
मुझसे आकर लिपट गई दुनिया

~166~

अब उसकी ठोकरों में ताज होंगे
वो सारी उम्र नंगे सर रहा है

~167~

हो फ़ुर्सत तो हमारे दुःख भी बाँटे
ज़रा देखो ख़ुदा क्या कर रहा है

~168~

कहाँ गुज़ारी हैं सासें जवाब माँगेगा
वो जब भी हमसे मिलेगा हिसाब माँगेगा

~169~

कश्ती पर आँच आ जाये तो हाथ कलम करवा देना
लाओ मुझे पतवारें दे दो मेरी ज़िम्मेदारी है

~170~

प्यास अगर मेरी बुझा दे तो मैं जानूँ वर्ना
तू समन्दर है तो होगा मेरे किस काम का है

~171~

अब तेरी बारी है, आईने बचाले अपने
मेरे हाथों में जो पत्थर है तेरे नाम का है

~172~

यहाँ तो चारों तरफ़ कोयले की खानें हैं
बचा न पायेगा कपड़े सँभालता क्यूँ है

~173~

यूँ लम्हा लम्हा सहारों का क़र्ज़दार न कर
गिराना है तो गिरा दे सँभालता क्यूँ है

~174~

सफ़र की हद है वहाँ तक कि कुछ निशान रहे
चले चलो कि जहाँ तक ये आसमान रहे

~175~

तू जो चाहे तो तेरा झूठ भी बिक सकता है
शर्त इतनी है कि सोने का तराज़ू रखले

~176~

सफ़र में जितना मज़ा है, वो मंज़िलों पे कहाँ
मैं इस दफ़ा तो बहुत दूर जाके लौट आया

~177~

वो अब भी रेल में बैठी सिसक रही होगी
मैं अपना हाथ हवा में हिला के लौट आया

~178~

शहरों शहरों गाँव का आँगन याद आया
झूठे दोस्त, और सच्चा दुश्मन याद आया

~179~

पीली पीली फ़सलें देख के खेतों में
अपने घर का खाली बर्तन याद आया

~180~

अपनी काग़ज़ की हवेली भीगने से बच गई
अक़्लमन्दी की, कि मौसम का इशारा पढ़ लिया

~181~

तेरा एहसान है जितनी भी मयस्सर कर दे
हाँ मगर इतनी हो साक़ी के गला तर कर दे

~182~

सारे बादल हैं उसी के वो अगर चाहे, तो

मेरे तपते हुए सेहरा को समन्दर कर दे

~183~

मैंने दिल देकर उसे की थी वफ़ा की इब्तिदा
उसने धोका दे के ये क़िस्सा मुकम्मल कर दिया

~184~

ये हवाएँ कब निगाहें फेर लें किसको ख़बर
शोहरतों का तख़्त जब टूटा तो पैदल कर दिया

~185~

मेरे दुश्मन की कोई बात तो सच हो जाये
आ मेरे दोस्त किसी दिन मुझे धोका दे दे

~186~

तुमको राहत की तबीयत का नहीं अंदाज़ा
वो भिकारी है मगर माँगो तो दुनिया दे दे

~187~

यहाँ तो मौत का सैलाब आता रहता है
बहुत बचा था, मगर अब के बार मैं भी हूँ

~188~

न जाने किस के मुक़द्दर में वो लिखा होगा
मगर ये सच है कि उम्मीदवार मैं भी हूँ

~189~

मैं परबतों से लड़ता रहा और चन्द लोग
गीली ज़मीन खोद के फ़रहाद हो गये

~190~

बैठे हुए हैं क़ीमती सोफों पे भेड़िये
जंगल के लोग शहर में आबाद हो गये

~191~

अब तो सेहरा, और समन्दर के लिये हैं बारिशें
खेतियाँ जितनी थीं उन पर कारखाने लग गये

~192~

आपसे इक बात कहनी है, बस इतनी बात थी
मुझको इतनी बात कहने में ज़माने लग गये

~193~

मुझसे दिल का हाल कोई कब पूछता है
ग़ज़लों की फ़रमाईश होती रहती है

~194~

सोने का रथ फ़क़ीर के घर तक न आयेगा
कुछ माँगना है हमसे तो पैदल उतर के आ

~195~

सारी फ़ितरत तो नक़ाबों में छिपा रक्खी थी
सिर्फ़ तस्वीर उजालों में लगा रक्खी थी

~196~

घरों की राख फिर देखेगें पहले देखना ये है
घरों को फूँक देने का इशारा कौन करता है

~197~

नया बहाना है, हर पल उदास होने का
ये फ़ायदा है तेरे घर के पास होने का

~198~

मेरी ग़ज़ल से बना ज़हन में कोई तस्वीर
सबब न पूछ मेरे देवदास होने का

~199~

जिसने कुछ देखा न हो गाँव के पनघट के सिवा
उसको दरिया भी समन्दर की तरह लगता है

~200~

वो इक इशारे पे दुनिया ख़रीद सकते हैं
जो सूरतों से बहुत ही ग़रीब लगते हैं

~201~

बहुत काँटों भरी दुनिया है लेकिन
गले का हार होती जा रही है

~202~

जब भी कोई इनआम मिला है, मेरा नाम भी भूल गये
जब भी कोई इल्ज़ाम लगा है, मुझ पर लाकर ढोल दिया

~203~

अब ग़म आयें, ख़ुशियाँ आयें, मौत आये या तू आये
मैंने तो बस आहट पाई और दरवाज़ा खोल दिया

~204~

तुम तो सूरज के पुजारी हो, तुम्हें क्या मालूम
रात किस हाल में कट कट के सहर तक पहुँची

~205~

ये तेरी पीठ है ऐ मेरे बेख़बर दुश्मन
मगर मुझे तेरे सीने पर वार करना है

~206~

तुझे क़बीले के क़ानून तोड़ने होंगे
मुझे तो सिर्फ़ तेरा इन्तिज़ार करना है

~207~

इक नई मस्जिद बनाना चाहते हैं शहर में
तेरे कूचे का कोई पत्थर उठा ले जायेंगे

~208~

ये शहर वो है जहाँ राक्षस भी रहते हैं

हर इक तराशे हुए बुत को देवता न कहो

~209~

हमारे ऐब हमें उँगलियों पर गिनवाओ
हमारी पीठ के पीछे हमें बुरा न कहो

~210~

ख़ुदा से काम कोई आ पड़ा है
बहुत मस्जिद के चक्कर लग रहे हैं

~211~

वो अन्दर से बहुत प्यासे हैं साहिब
बज़ाहिर जो समन्दर लग रहे हैं

~212~

ये मशविरा है कि बैसाखियाँ उधार न ले
उड़नचियों से कोई कितनी दूर जायेगा

~213~

घर के बाहर ढूँडता रहता हूँ दुनिया
घर के अन्दर दुनियादारी रहती है

~214~

सब को दुःख से मुक्ती मिलने वाली है
बोतल से इक देव निकलने वाला है

~215~

खुले-खुले से रहने के हम आदी हैं
ध्यान किसे है दरवाज़े की सांकल का

~216~

इसी उम्मीद पर ये रतजगे हैं
किसी दिन रात भर होगी हमारी

~217~

दुआ माँगेगें कब तक आसमां से
ज़मीं कब मोअतबर होगी हमारी

~218~

बुलन्दियों के सफर में ये ध्यान आता है
ज़मीन देख रही होगी रास्ता मेरा

~219~

मैं जंग जीत चुका हूँ मगर ये उलझन है
अब अपने आप से होगा मुक़ाबला मेरा

~220~

ज़िन्दगी एक अधूरी तस्वीर
मौत आए तो मुकम्मल हो जाये

~221~

फिर ख़ुदा चाहे तो आँखें ले ले
बस मेरा ख़्वाब मुकम्मल हो जाये

~222~

वह जो मुनसिफ़ है तो क्या कुछ भी सजा दे देगा
हम भी रखते हैं ज़ुबां पहले ख़ता पूछेगें

~223~

उजाले बाँटने वालों पर क्या गुज़रती है
किसी चिराग़ की मानिन्द जल के देखुँगा

~224~

अब अगर कम भी जियें हम तो कोई रन्ज नहीं
हमको जीने का सलीक़ा है यही काफ़ी है

~225~

क्या ज़रूरी है कभी तुम से मुलाक़ात भी हो
तुमसे मिलने की तमन्ना है यही काफ़ी है

~226~

वह मेरी हमक़दम होने न पाई
जो मेरी हम सफ़र कर दी गयी है

~227~

है आसमां से बुलन्द उसका मर्तबा जिसको
शर्फ़ है आप के कदमों की धूल होने का

~228~

चलो फ़लक पर कहीं मन्ज़िलें तलाश करें
ज़मीं पर कुछ नहीं हासिल हसूल होने का

~229~

मैं उस मुहल्ले में एक उम्र काट आया हूँ
जहाँ पर घर नहीं मिलते मकान मिलते हैं

~230~

बहुत कठिन है मसाफ़त नई ज़मीनों की
क़दम-क़दम पर नये आसमान मिलते हैं

~231~

हम ठहरे बंजारे हम बंजारों को
दरवाज़ों और दीवारों से क्या लेना

~232~

आप की नज़रों में सूरज की है जितनी अज़मत
हम चिराग़ों का भी उतना ही अदब करते हैं

~233~

ख़ुद को पत्थर सा बना रखा है कुछ लोगों ने
बोल सकते हैं मगर बात ही कब करते हैं

~234~

मैं आकर दुश्मनों में बस गया हूँ

यहाँ हमदर्द हैं दो चार मेरे

~235~

क्या कहीं क़त्ल हो गया सूरज
रात से रात भर से पूछते हैं

~236~

हम ने ख़ुद अपनी रहनुमाई की
और शोहरत हुई ख़ुदाई की

~237~

हसीन लगते हैं जाड़ों में सुबह के मन्ज़र
सितारे धूप पहन कर निकलने लगते हैं

~238~

बुलन्दियों का तसव्वुर भी ख़ूब होता है
कभी कभी तो मेरे पर निकलने लगते हैं

~239~

बुझ गये चाँद सब हवेली के
जल रहा है चिराग़ मुफ़लिस का

~240~

भूल जाना उसे आसान नहीं
याद रखना भी हुनर है उसको

~241~

हों निगाहें ज़मीन पर लेकिन
आसमां पर निशाना रखा जाए

~242~

दिल लुटाने में एहतियात रहे
यह ख़ज़ाना खुला न रखा जाए

~243~

आँगन के मासूम शजर ने एक कहानी लिखी है
इतने फल शाख़ों पर नहीं थे जितने पत्थर बिखरे हैं

~244~

तुला है धूप बरसाने पर सूरज
शजर भी छतरियाँ लेकर खड़े हैं

~245~

किसी दिन चाँद निकला था यहाँ से
उजाले आज भी छत पर खड़े हैं

~246~

है फ़ुरसत तो किसी से इश्क़ कर ले
हमारी ही तरह बेकार हो जा

~247~

दोपहर तक तो साथ चल सूरज
तूने रस्ते में शाम कर दी है

~248~

हमारा ज़िक्र भी अब जुर्म हो गया है वहाँ
दिनों की बात है महफ़िल की आबरू हम थे

~249~

ख़याल था कि ये टकराव रोक दें चलकर
जो होश आया तो देखा लहू-लहू हम थे

~250~

आज-कल छुट्टी के दिन भी घर पड़े रहते हैं हम
शाम, साहिल, तुम, समन्दर सब पुराने हो गए

~251~

सच का बोझ उठाए हूँ अब पलकों पर
पहले मैं भी ख़्वाब-नगर में रहता था

~252~

अब एक दरिया है और फिर एक समन्दर
अभी तो सिर्फ़ नदी पार की है

~253~

नफ़रत का बाज़ार न बन
फूल खिला तलवार न बन

~254~

रिश्ता-रिश्ता लिख मंज़िल
रस्ता बन दीवार न बन

~255~

इक समन्दर अपने ही अन्दर डुबोना है मुझे
एक कश्ती चाहिए मुझको सवारी के लिए

~256~

दिलों में आग लबों पर गुलाब रखते है
सब अपने चेहरों पर दुहरी नक़ाब रखते हैं

~257~

वो अब भी रेल में बैठी सिसक रही होगी
मैं अपना हाथ हवा में हिला के लौट आया

~258~

ख़बर मिली है कि सोना निकल रहा है वहाँ
मैं जिस ज़मीन पर ठोकर लगा के लौट आया

~259~

फूँक डालूँगा किसी रोज़ मैं दिल की दुनिया
ये तिरा ख़त तो नहीं है कि जला भी न सकूँ

~260~

इक न इक रोज़ कहीं ढूँढ़ ही लूँगा तुझको

ठोकरें ज़हर नहीं हैं कि मैं खा भी न सकूँ

~261~

सब ही अपनी तेज़गामी के नशे में चूर हैं
लाख़ आवाज़ें लगा लीजै ठहरता कौन है

~262~

भाई समझ रहा है तो आ जा गले लगें
दुश्मन समझ रहा है तो हसरत निकाल ले

~263~

अभी रंगों की ज़बाँ गुंग पड़ी है लेकिन
जब ये तस्वीर बनेगी तो क़यामत होगी

~264~

अब के बारिश में नहाने का मज़ा आएगा
बेलिबासी की तरह घर की खुली छत होगी

~265~

प्यास तो अपनी सात समन्दर जैसी थी
नाहक़ हमने बारिश का एहसान लिया

---

1. एक बादशाह जिसने स्वर्ग बनवाया और उसमें क़दम रखते ही मर गया
2. शराब घर
3. रातभर जागना

फ़िल्मी नग़मे

क़रीब (1998)

ये क्या हुआ - ये कब हुआ,
कैसे हुआ - क्या पता...

चोरी चोरी जब नज़रें मिलीं - चोरी चोरी फिर नींदें उड़ीं
चोरी चोरी ये दिल ने कहा, चोरी में भी है मज़ा...

क्या जाने क्या मिल गया, क्या जाने क्या खो गया
तूने ये क्या कर दिया, मुझको ये क्या हो गया...
पलकें झुकीं, पलकें उठीं, क्या कह दिया - क्या सुना...
चोरी चोरी जब नज़रें मिलीं...

फूलों के ख़्वाबों में आकर, ख़ुशबू चुरा ले गई,
बादल का आँचल भी आकर, पागल हवा ले गई...
एक फूल ने एक फूल से फिर कान में कुछ कहा...
चोरी चोरी जब नज़रें मिलीं...

रिश्तों के नीले भंवर कुछ और गहरे हुए,
तेरे मेरे साये हैं, पानी पर ठहरे हुए...
जब प्यार का मोती गिरा, बनने लगा दायरा...
चोरी चोरी जब नज़रें मिलीं - चोरी चोरी फिर नींदें उड़ीं
चोरी चोरी ये दिल ने कहा, चोरी में भी है मज़ा...

मीनाक्षी (2004)

कोई सच्चे ख़्वाब दिखा कर, आँखों में समा जाता है,
ये रिश्ता... ये रिश्ता क्या कहलाता है...
ये रिश्ता क्या कहलाता है...

जब सूरज थकने लगता है, और धूप सिमटने लगती है,
कोई अनजानी सी चीज़ मेरी साँसों से लिपटने लगती है,
मैं दिल के क़रीब आ जाती हूँ, दिल मेरे क़रीब आ जाता है,
ये रिश्ता क्या कहलाता है...

इस गुमसुम झील के पानी में, कोई मोती आकर गिरता है,
इक दायरा बनने लगता है, और बढ़के भँवर बन जाता है...
ये रिश्ता क्या कहलाता है...

तस्वीर बनाती रहती हूँ, मैं टूटी हुई आवाज़ों पर,
इक चेहरा ढूँढ़ती रहती हूँ, दीवारों कभी दरवाज़ों पर,
मैं अपने पास नहीं रहती, और दूर से कोई बुलाता है...
ये रिश्ता क्या कहलाता है...

इश्क़ (1997)

देखो देखो जानम हम दिल अपना तेरे लिए लाए,
सोचो सोचो दुनिया में क्यूँ आए, तेरे लिए आए...
अब तू हमें चाहे, अब तू हमें भूले, हम तो बने रहेंगे तेरे साये..

ये क्या हमें हुआ, ये क्या तुम्हें हुआ
साँसों के दरिया में हलचल सी होने लगी...
नई है ये सज़ा, सज़ा में है मज़ा,
चाहत को चाहत की शबनम भिगोने लगी...
अब और क्या चाहें, अब और क्या देखें
देखा तुम्हें तो दिल से निकली हाए...
देखो देखो जानम हम ...

सुनो - ज़रा सुनो, चुनो - हमें चुनो
आँखों ने आँखों से शरमा के कुछ कह दिया
सुना - मैंने सुना, चुना - तुम्हें चुना
शीशे ने शीशे से टकरा के कुछ कह दिया
हैं पल मुरादों के, ये पल हैं यादों के
अब मेरी जाँ रहे या चली जाये...
देखो देखो जानम हम दिल अपना तेरे लिए लाए,
सोचो सोचो दुनिया में क्यूँ आए तेरे लिए आए...
अब तू हमें चाहे, अब तू हमें भूले, हम तो बने रहेंगे तेरे साये...

मर्डर (2004)

दिल को हज़ार बार रोका, रोका, रोका
दिल को हज़ार बार टोका, टोका, टोका
दिल है हवाओं का झोंका, झोंका, झोंका
दिल को बचाना, धोखा ना खाना
धोखा है प्यार, यार - प्यार है धोखा...

ढूँढेगा कोई बहाना, ढूँढेगा कोई निशाना
दिल का बाज़ार है यहाँ तो, दिल को दिलों से बचाना...
दिल को हज़ार बार रोका, रोका, रोका...

बचना इस आशिक़ी से बचना, काँटों की दोस्ती से बचना
आँखों में भर दे अँधेरा, तुम ऐसी रोशनी से बचना...
दिल को हज़ार बार रोका, रोका, रोका
दिल को हज़ार बार टोका, टोका, टोका
दिल है हवाओं का झोंका, झोंका, झोंका
दिल को बचाना, धोखा ना खाना
धोखा है प्यार, यार - प्यार है धोखा...

गली गली चोर है (2012)

ये सब मन के भी हैं काले, ये सब धन के भी हैं काले
मेरे घर में ही रहते हैं मेरा घर लूटने वाले...

जो चीज़ें जंगलों की हैं उन्हें जंगल में रहना था,
वो अब दिल्ली में रहते हैं, जिन्हें चम्बल में रहना था...

गली गली चोर है, गली गली चोर है
करप्शन - करप्शन - करप्शन का शोर है
चोरों का दौर है, चोरों का ज़ोर है
चारों से बंधी हुई चोरों की डोर है
गली गली चोर है गली गली चोर है

करप्शन ने लिक्खी है सारी कहानी, बिना घूसखोरी ना बिजली ना पानी
यहाँ साँस लेने की कीमत लगेगी, घरों से निकलते ही रिश्वत लगेगी
यहाँ आम लोगों का है ये मुक़द्दर, ना कुछ घर के बाहर ना कुछ घर के अंदर
ना नेहरू का सपना सलामत रहा है, ना गाँधी का चरखा सलामत रहा है
अदालत कचहरी ये वर्दी ये थाने, चलाते हैं रिश्वत के सब कारखाने
दिशा कोई भी हो लुटेरो का ज़ोर है, गली गली चोर है, गली गली चोर है

ये टोपी, ये धोती, ये कुर्ते पजामे, सब इनके नाटक हैं, सब इनके ड्रामे
कोई इनसे कह दे गिरेबां में झाकें, दुआ है के खुल जाएँ दिल्ली की आँखें
लड़ाई अभी हमको रखनी है जारी, है आज़ादी अब तक अधूरी हमारी
सियासी लुटेरों का कैसा ये दौर है, गली गली चोर है, गली गली चोर है

घातक (1996)

मारा रे, तेरी आँखों ने मुझे मारा रे...
हारा रे, दिल ये तुझ पर हारा रे...

कोई जाये तो ले आए, मेरी लाख दुआएं पाए
मैं तो पिया की गली जिया भूल आई रे...

मिल जाये दिल मेरा दिल से पूछूंगी,
कह दे मेरे दिल तू किसपे मरता है
दिल ग़ायब है मेरा देखो लेकिन रे, कुछ-कुछ धक-धक करता है
दिल मेरा पहेली है, सोने की हवेली है
दिल जबसे हुआ है गुम, मेरी जान अकेली है
सोचा था रख लूँगी मैं दिल से बदल कर दिल
अब जाने कहाँ गुम है सीने से निकल कर दिल
मैं तो रहती हूँ, मैं तो रहती हूँ, हाय घबरायी रे
कोई जाये तो ले आये मेरी लाख दुआएं पाए

दिल चांदी है, चांदी है, दिल चांदी रे,
दिल सोना है, सोना है, दिल सोना रे
चाहत से मोहब्बत से भरा होगा, मेरे क़ातिल दिल का कोना कोना रे
दिल साथ नहीं जब से, पागल ये जवानी है
मेरा दिल है एक शोला, मेरा हुस्न पानी है
दिल प्यार का है जोगी, दिल प्यार का है रोगी
मेरे दिल पर दिलबर की, तस्वीर बनी होगी
मैं तो जीतने गई थी, मैं तो जीतने गई थी, लेकिन हार आई रे
कोई जाये तो ले आए मेरी लाख दुआएं पाए
मैं तो पिया की गली जिया भूल आई रे...

मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी (1994)

पास वो आने लगे ज़रा ज़रा - नज़रें चुराने लगे ज़रा ज़रा
दिल पर वो छाने लगे ज़रा ज़रा - ज़रा ज़रा ज़रा ज़रा ज़रा ज़रा
धड़कनें चुराने लगे ज़रा ज़रा - पास वो आने लगे ज़रा ज़रा
हमें वो चाहने लगे ज़रा ज़रा - अपना बनाने लगे ज़रा ज़रा
दिल को धड़काने लगे ज़रा ज़रा - ज़रा ज़रा ज़रा ज़रा ज़रा ज़रा

कहती है ये तेरी पायल, तूने किया मुझे घायल - घायल
शाम सवेरे दिल में मेरे, तूने मचा दिल हलचल हलचल

तेरी मेरी प्रेम कहानी, है सागर का गहरा पानी
लाखों दिन और लाखों रातें, ख़त्म ना होंगी अपनी बातें
नींदें उड़ाने लगे ज़रा ज़रा, अपना बनाने लगे ज़रा ज़रा
धड़कनें चुराने लगे ज़रा ज़रा - पास वो आने लगे ज़रा ज़रा

आजा मुझको पागल कर दे, ख़ुशियों से ये दामन भर दे,
हसरत है ये दिल में मेरे, मेहबूबा से दुल्हन कर दे

माँग में तेरी तारे भर दूँ, चाँद को तेरा कंगन कर दूँ
फूलों से तस्वीर बनाऊँ, किरणों से मैं रूप सजाऊँ
धड़कनें चुराने लगे ज़रा ज़रा - पास वो आने लगे ज़रा ज़रा
साँसों में बसाने लगे ज़रा ज़रा, दिल को लुभाने लगे ज़रा ज़रा
पास वो आने लगे ज़रा ज़रा - नज़रें चुराने लगे ज़रा ज़रा

मिशन कश्मीर (2000)

बुम्बरो बुम्बरो, श्याम रंग बुम्बरो
आए हो किस बग़िया से... तुम

भँवरे ओ श्याम भँवरे, खुशियों को साथ लाए
मेहँदी की रात में तुम ले के सौग़ात आए
काजल का रंग लाए, नज़रें उतारने को
बागों से फूल लाये रस्ते सँवारने को
आओ मेहँदी की छाँव में गीत सुनाएँ - बुम्बरो
झूमें-नाचें साज़ गाएँ, जश्न मनाएँ - बुम्बरो
बुम्बरो बुम्बरो श्याम रंग बुम्बरो...

खिल खिल के लाल हुआ मेहँदी का रंग ऐसे
गोरी हथेलियों पर खिलते हो फूल जैसे
ये रंग धूप का है, ये रंग छाँव का है
मेहँदी का रंग नहीं माँ की दुआओं का है
इस मेहँदी का रंग है सच्चा, बाक़ी सारे झूटे
हाथों से अब मेहँदी का ये रंग कभी ना छूटे
बुम्बरो बुम्बरो श्याम रंग बुम्बरो...

चंदा की पालकी में दिल की मुराद लाई
जन्नत का नूर ले के मेहंदी की रात आई
रुख पर सहेलियों के ख़्वाबों की रोशनी है
सबने दुआएं मांगी, रब ने क़ुबूल की है
ये हाथों में मेहँदी है या शाम की लाली - बुम्बरो
चाँद सितारे लेकर आए रात निराली - बुम्बरो
बुम्बरो बुम्बरो श्याम रंग बुम्बरो...

मुन्नाभाई एम.बी.बी.एस. (2003)

यार ज़रा माहौल बना, हर पल में उठा सदियों का मज़ा
जो बीत गया सो बीत गया, जो बीतना है वो हंस के बिता...
यार ज़रा माहौल बना, हर दर्द की है बस एक दवा
जी खोल के जी, जी जान से जी, कुछ कम ही सही पर शान से जी...

देख ले... आँखों में आँखे डाल
सीख ले... हर पल मै जीना यार
सोच ले... जीवन के पल हैं चार
याद रख... मरना है एक बार
मरने से पहले जीना... सीख ले - देख ले...

बैय्याँ... खुशियों की थाम के बैय्याँ - ग़म की मरोड़ कलईय्याँ...
ग़म का प्यारे ग़म मत करना - छोड़ दे अब तो हर दिन मरना
मरने से पहले जीना... सीख ले - देख ले... आँखों में आँखे डाल...

हईय्या... साँसों की धुन पे गा ले हईय्या - जीवन है बरफ की नैय्या...
नैय्या पिघले हौले हौले - चाहे हँस ले चाहे रो ले
मरने से पहले जीना... सीख ले
देख ले... आँखों में आँखें डाल
सीख ले... हर पल में जीना यार
सोच ले... जीवन के पल हैं चार
याद रख... मरना है एक बार
मरने से पहले जीना... सीख ले

खुद्दार (1994)

सोहनी को महिवाल की - हीर को राँझे की
शीरी को फरहाद की - लैला को मजनूँ की
सबको किसी की ज़रूरत है...

तुम मानो या ना मानो, पर प्यार इन्सां की ज़रूरत है
दिल लगा के देखो, ज़िंदगी कितनी ख़ूबसूरत है

रंग वीरान थे, फूल बेजान थे
प्यार जब तक ना था, हम परेशान थे
बादलों में भी है, सागरों में भी है
फूल में ही नहीं, पत्थरों में भी है
सबके दिल में सबकी नज़र में
किसी ना किसी की चाहत है
दिल लगा के देखो, ज़िन्दगी कितनी ख़ूबसूरत है

प्यार का रंग ले, दिल की तस्वीर से
अपनी किस्मत बदल, मेरी तक़दीर से
साथ जिसके चाहने वाला
किस्मत उसी की किस्मत है
दिल लगा के देखो, ज़िंदगी कितनी खूबसूरत है

द जेन्टलमैन (1994)

हम अपने ग़म को सजाकर बहार कर लेंगे
तेरे ख़्यालों को थोड़ा सा प्यार कर लेंगे

मोहब्बतों की कहानी, कहानी तुझे सुनाएँगे
तुझे बुलाएँगे ख़्वाबों में और जगायँगे
हवा चलेगी तो आँचल, आँचल की याद आएगी
घटा उठेगी तो काजल, काजल की याद आयेगी
तेरे हसीन तसव्वुर को प्यार कर लेंगे
यूँ याद हम भी तुझे बार बार कर लेंगे
हम अपने ग़म को सजाकर बहार कर लेंगे...

जो प्यार करते हैं वो इन ग़मों को सहते हैं
मोहब्बतों में तूफ़ाँ आते रहते हैं
तुम्हारे नाम को धड़कन, धड़कन के साथ रख लेंगे
तुम्हारे चेहरे को दर्पण, दर्पण के साथ रख लेंगे
ये दूरियों का समंदर भी पार कर लेंगे
तमाम उम्र तेरा इंतज़ार कर लेंगे
हम अपने ग़म को सजाकर बहार कर लेंगे...

हम अपने ग़म को सजाकर बहार कर लेंगे
तेरे ख़्यालों को थोड़ा सा प्यार कर लेंगे

नाजायज़ (1995)

तुझे प्यार करते करते, तेरी नींद तक उड़ा दूँ
आऊँ जो अपनी ज़िद पे, तुझे क्या से क्या बना दूँ

तू ही मेरी बंदगी है, तू ही मेरी आरती है
मुझे क्या गरज़ के दुनिया, तुझे क्या पुकारती है
तुझे ज़िंदगी नई दूँ, तुझे नाम भी नया दूँ
आऊँ जो अपनी ज़िद पे, तुझे क्या से क्या बना दूँ
तुझे प्यार करते करते, तेरी नींद तक उड़ा दूँ

वो ख़ुशी की रोशनी हो के ग़मों का हो अंधेरा
जो नसीब होगा तेरा वो नसीब होगा मेरा
मेरे हाथ की लकीरें तेरे हाथ पे सजा दूँ
आऊँ जो अपनी ज़िद पे, तुझे क्या से क्या बना दूँ
तुझे प्यार करते करते, तेरी नींद तक उड़ा दूँ...

तुझे प्यार करते करते, तेरी नींद तक उड़ा दूँ
आऊँ जो अपनी ज़िद पे, तुझे क्या से क्या बना दूँ

तुझे चैन लेने देगी ना कभी मेरी मोहब्बत
तेरे दिल के आईने में रहेगी मेरी ही सूरत
ना कभी भुला सकेगी तू मेरे दिल की चाहत
कोई ख़्वाब तो नहीं मैं मुझे हो सके भुला तू
आऊँ जो अपनी ज़िद पे, तुझे क्या से क्या बना दूँ
तुझे प्यार करते करते, तेरी नींद तक उड़ा दूँ...
मेरी तरह ज़िंदगी में तू कभी ना चैन पाये
मैं जैसे रो रहा हूँ तुझे भी कोई रुलाये
मेरे बिन अगर जिये तु तो कभी जिया ना जाये
तु कभी ना भूल पाये मैं तुझको वो सज़ा दूँ

आऊँ जो अपनी ज़िद पे, तुझे क्या से क्या बना दूँ

तुझे प्यार करते करते, तेरी नींद तक उड़ा दूँ...
तुझे प्यार करते करते, तेरी नींद तक उड़ा दूँ
आऊँ जो अपनी ज़िद पे, तुझे क्या से क्या बना दूँ

हमेशा (1997)

ए दिल हमें इतना बता
मरते हैं हम जिनके लिए
कैसे चले उनको पता

ए दिल हमें इतना बता
दिल ही अगर एक दर्द हो
तो क्या करें दिल की दवा
मरते हैं हम जिनके लिए
कैसे चले उनको पता

जिन्हें हमने नींदों में ख़्वाबों में पाला
वो आँखों की ठंडक वो दिल का उजाला
हैं बेताब हम भी ये वो मानते हैं
मगर वह इशारों को कम जानते हैं
ज़माने की नज़रों से हमने बचा के
उन्हें धड़कनों में रखा है छुपा के
वो चेहरा कोई आईना भी न देखे
कोई और तो क्या ख़ुदा भी न देखे
ख़ुदा भी न देखे, ख़ुदा भी न देखे
माँगी है ये दिल ने दुआ
मरते हैं हम जिनके लिए
कैसे चले उनको पता
दिल ही अगर एक दर्द हो...
ये दिल जिनकी चाहत में पागल बना है
उन्हें क्या ख़बर है हमें क्या हुआ है
उन्हें क्या पता क्या है हालत हमारी
तड़पती है कैसे मोहब्बत हमारी

ये दिल कह रहा है धड़कते धड़कते
वो आएंगे एक दिन तड़पते तड़पते
हमारे हैं वो उनको पा के रहेंगे
अगर मिल न पाये तो हम छीन लेंगे
तो हम छीन लेंगे - तो हम छीन लेंगे
हम कुछ नहीं उनके बिना
मरते हैं हम जिनके लिए
कैसे चले उनको पता
दिल ही अगर एक दर्द हो
तो क्या करें दिल की दवा

क़रीब (1998)

शाद रखे, आबाद रखे, रब्बा तेनु
हो रब्बा तेनु...

माहिया... रीत यही जग की...

दुल्हन बनी है बन्नी आज बन्नो शहज़ादी
आई रुत आई, रुत आई आज मुरादाँ दी
छेती छेती मेहंदी लांवा... सोणा सोणा चुड़ा पांवा

इन अँखियों में जाये कैसे कजरा रे... इनमें कोई बसता
जिस रस्ते पे जाये ले के साजन रे... वो है मेरा रस्ता
कोई मिलता है, कोई बिछड़ता है... कैसा है ये रिश्ता...
माहिया... रीत यही जग की...

पल दो पल अब इस आँगन में, तेरा और ठिकाना
बाबुल की ये नगरी तुझको छोड़ के होगा जाना...

जिन गलियों में मैनें गुज़ारा है, बचपन हँसता गाता
उस आँगन से उस दरवाज़े से छूट रहा है नाता
कोई बताये तो, कोई समझाये तो... दिन ये क्यूँ है आता...
माहिया... रीत यही जग की...

हीरो हिन्दुस्तानी (1998)

ऐसी वैसी बात नहीं, छोटी मोटी बात नहीं
ये तो मोहब्बत है, ये ही इबादत है...
आँखों के रस्ते से दिल में उतर कर... दिल खो जाता है...
नींद उड़ जाती है, प्यार हो जाता है...

कभी ये प्यार है रेशम, कभी ख़ुशबु, कभी मौसम
कभी शोला, कभी शबनम...
कहीं सरगम कहीं संगम, कहीं प्रीतम कहीं हमदम
किसी से तुम किसी से हम...
चाहत के रिश्ते का जो नाम रख दो वही हो जाता है
आँखों के रस्ते से दिल में उतर कर... दिल खो जाता है...
नींद उड़ जाती है, प्यार हो जाता है...

धड़क उठता है दिल छूम छुम, ज़ुबां चुप चुप, नज़र गुम सुम
ये चाहत की निशानी है...
इसे आँखें सुनाती हैं, इसे आँखें समझती हैं
ये आँखों की कहानी है...
बाहों की राहों में कोई दीवाना जब खो जाता है
आँखों के रस्ते से दिल में उतर कर... दिल खो जाता है...
नींद उड़ जाती है, प्यार हो जाता है...

ऐसी वैसी बात नहीं, छोटी मोटी बात नहीं
ये तो मोहब्बत है, ये ही इबादत है...

इंतेहा (2003)

ढलने लगी है रात कोई बात कीजिये
बढ़ने लगी है बात कोई बात कीजिये
है जिंदगी का साथ कोई बात कीजिये
कट जाएगी ये रात कोई बात कीजिये

जाने तन्हाई हमसे क्या कर रही है
दिल की गहराई हमसे क्या कह रही है
एक एक पल के साथ - कोई बात कीजिये
बन कर रहेगी बात कोई बात कीजिये

जितनी हदें हैं सब तोड़ डालें, बातों ही बातों में हम
होंठों के रंग से होंठों पे लिख दें, बातें दिलों की सनम
बात चाहत की रोशनी बनके आए
बात सुन सुन के बात भी मुस्कुराए
यूँ सादगी के साथ, कोई बात कीजिये
बन कर रहेगी बात, कोई बात कीजिये

पिघलेंगे हम तुम इस चाँदनी में, कब तक घुलेंगे बदन,
प्यासा है दिल, प्यासी ये रुत है, चुभने लगीं हैं किरण
गुनगुनाती है क्या जवानी सुनेंगे
आँखों आँखों में हर कहानी सुनेंगे
होंठों पे रख के हाथ कोई बात कीजिये
बन कर रहेगी बात, कोई बात कीजिये

Sssshhh (2003)

कब मेरा हाल ए दिल, पूछोगे तुम सनम
इस इंतज़ार में मर ही न जाएँ हम...
आजा आजा, आजा - निकल न जाये दम...

चाँद... ख़ुद में ना हो जाये गुम
जान... जाने कब आओगी तुम
कब तक चलें इस आग पर - मैं और मेरी दीवानगी
जान... जाने कब आओगी तुम
कभी ये भी सोचा कभी ये भी जाना
के मर मर के ज़िंदा हैं हम
कब मेरा हाले दिल, पूछोगे तुम सनम...

उठने लगा, दिल से धुआं... जलने लगीं, तन्हाइयाँ
इक रात में, अब साथ हैं मैं और मेरी परछाइयाँ
पागल हवा, पागल समां, लगने लगा दुश्मन जहां...
मेरे ख़्वाब चुन लो, सज़ा मेरी सुन लो
तुम्हें जिंदगी की क़सम
कब मेरा हाल ए दिल, पूछोगे तुम सनम...

राम शस्त्र (1995)

वाह रे क्या बात है, तू मेरे साथ है
तारों की रात है, प्यार की बारात है

तुझे मांगा था, तुझे पाया है
अब जा के राम पे यकीं आया है

सदियों से थी अपनी दूरी - दिन थे अधूरे रात अधूरी
जन्मों से हूँ तेरा दीवाना - ज़िंदा रहना था बहाना
साजन जब तू और कहीं था - इस दुनिया में कुछ भी नहीं था
जिस दिन अपना प्यार बना है, उस दिन से संसार बना है
मुझे छोड़ ना देना राम कसम - दिल तोड़ ना देना राम कसम
हाथों की लकीरों में तुझको पाया है, अब जा के राम पे यकीं आया है...

इंद्रधनुष अंगड़ाई है तेरी - चाँद नहीं परछाई है तेरी
जब तक चमकेंगे दो तारे - दुनिया लेगी नाम हमारे
प्यार की धुन पे गाता रहूँगा - बन बन के राम आता रहूँगा
छोड़ के सारे रंग चलूँगी - जंगल जंगल संग चलूँगी
तू राम है मेरा राम कसम - तू सीता मेरी राम कसम
धूप हूँ मैं तू मेरा साया है, अब जा के राम पे यकीं आया है...

तुझे मांगा था, तुझे पाया है
अब जा के राम पे यकीं आया है

याराना (1995)

जाने वो कैसा चोर था, दुपट्टा चुरा गया
निंदिया जो उलझी ज़रा ज़रा, चक्कर वो चला गया
चोर चोर...

खोई थी में यादों - ख़ुद अपने ही ख्वाबों में
मेरा दुपट्टा नीला था - चोर बहुत ज़हरीला था
कैसे कहूँ क्या बीत गया - दुश्मन मुझसे जीत गया
चोर चोर...

मोम की गुड़िया थी, वो मुझको पत्थर बना गया...
जाने वो कैसा चोर था, दुपट्टा चुरा गया
मैं फूलों की डाली थी, मैं पुजा की थाली थी
मेरे भी कुछ सपने थे, मेरे भी कुछ अपने थे
सारे सपने चूर हुये, सारे अपने दूर हुये
चोर चोर...
चैन से मैं सोई थी, मेरी नींदें उड़ा गया
जाने वो कैसा चोर था, दुपट्टा चुरा गया

तमन्ना (1997)

ये क्या हुआ, ये क्या हुआ
ये क्यूँ हुआ, ये क्यूँ हुआ
कब से संभाला था दिल को कहाँ खो गया

तूने चुराया तो नहीं - अपना बनाया तो नहीं

दिल धड़कता है कब - आँख मिलती है जब
आँख मिलती है कब - वक़्त आता है जब
वक़्त आता है कब - प्यार होता है जब
प्यार होता है कब - यार मिलता है जब
तूने चुराया तो नहीं - अपना बनाया तो नहीं
ये क्या हुआ, ये क्या हुआ...

गर्म सांसें हुईं, जिस्म जलता है क्यूँ
बेवजह रात दिन, दिल मचलता है क्यूँ
आँख से आँख की बात होती है जब
हर गली रास्ता, रूठ जाता है तब
तूने चुराया तो नहीं - अपना बनाया तो नहीं

ये क्या हुआ, ये क्या हुआ
ये क्यूँ हुआ, ये क्यूँ हुआ
कब से संभाला था दिल को कहाँ खो गया

प्रेम-अगन (1998)

हम तुमसे मोहब्बत करते हैं, करते नहीं तो मर जाते
ए जान ए तमन्ना हम तुम पर मरते नहीं तो मर जाते
प्रेम-अगन, ये ही है प्रेम-अगन...

तुम पहला प्यार हमारा हो, हम दे दें जान इशारा हो
हम इतनी मोहब्बत रखते हैं, सौ जनम भी कम पड़ सकते हैं
किरणों सी चमकती रहती हो, तुम मुझमें धड़कती रहती हो
दिल में जो प्यार है तुम्हारा, मोम नहीं वो है अंगारा
इस आग में जलते रहते हैं, जलते नहीं तो मर जाते
ए जान ए तमन्ना हम तुम पर मरते नहीं तो मर जाते
प्रेम-अगन, ये ही है प्रेम-अगन...

अब दिल वालों की बारी है, ख़ुद मौत भी हमसे हारी है,
अब रंग ही रंग तुम्हारा है, अब हर पल संग तुम्हारा है
तुम किस्मत मेरी बाहों की, तुम मंज़िल मेरी राहों की
साँसों पे तुम्हारा पहरा है, आँखों में तुम्हारा चेहरा,
ये चेहरा पढ़ते रहते हैं, पढ़ते नहीं तो मर जाते
ए जान ए तमन्ना हम तुम पर मरते नहीं तो मर जाते
प्रेम-अगन, ये ही है प्रेम-अगन...

हम तुमसे मोहब्बत करते हैं, करते नहीं तो मर जाते
ए जान ए तमन्ना हम तुम पर मरते नहीं तो मर जाते
प्रेम-अगन, ये ही है प्रेम-अगन...

खुद्दार (1994)

बरसात का मौसम, यहाँ हम यहाँ तुम
सजनी को मिल गए साजन... साजन

तुमसा कोई प्यारा कोई मासूम नही है
क्या चीज़ हो तुम ख़ुद तुम्हें मालूम नही है
लाखों हैं मगर तुमसा यहाँ कौन हंसीं है
तुम जान हो मेरी तुम्हें मालूम नही है

सौ फूल खिले जब ये खिला रूप सुनहरा
सौ चाँद बने जब ये बना चाँद सा चेहरा
इतना भी कोई प्यार की राहों में ना गुम हो
बस होश है इतना के मेरे साथ में तुम हो
धड़कन है कहीं, दिल है कहीं, जान कहीं है
तुम जान हो मेरी तुम्हें मालूम नही है

ये होंठ ये पलकें ये निगाहें ये अदाएं
मिल जाये ख़ुदा मुझको तो में ले लूँ बलाएँ
दुनिया का कोई ग़म भी मेरे पास ना होगा
तुम साथ चलोगे तो ये एहसास ना होगा
आकाश है पैरों में हमारे के ज़मीं है
तुम जान हो मेरी तुम्हें मालूम नही है
ऐसा कोई महबूब ज़माने में नही है
क्या चीज़ हो तुम ख़ुद तुम्हें मालूम नही है

मीनाक्षी (2004)

ज़िंदगी हाथ मिला, साथ चल, साथ में आ
उम्र भर साथ रही, दो क़दम और सही...

कोइ सूरज की डगर, कोई सोने का नगर
चाँद के रथ पे चले, जहां ठहरे ये नज़र
धूप दरियाओं में है, फिर सफर पाँव में है
दिल का आवारा दिया, दूसरे गाँव में है
आओ चलें हम वहीं
दो क़दम और सही...

ख़्वाब ढलते हैं जहां दिल पिघलते हैं जहां
आओ चलते हैं वहीं वो ज़मीं दूर नहीं
दोस्ती होगी वहाँ रोशनी होगी वहां
उस उजाले के लिए जल चुके लाखों दिये
एक हम और सही
दो क़दम और सही...

किसकी आवाज़ है सुन ये नया साज है सुन
कौन देता है सद, चल के देखें ज़रा
रात वीरान सही रात सुनसान सही
हर घड़ी साथ रहे कितने ग़म साथ सहे
थोड़े ग़म और सही
दो क़दम और सही...